चतुर्थ अध्याय

महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण

⁕ प्रस्तावना

4.1 महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण

(4.1.1) - प्रथम खंड - “सुबह की महक”

(4.1.2) - द्‌वितीय खंड - “क्षणों का संकट”

(4.1.3) - तृतीय खंड - “संबंधों का सन्नाटा”

⁎ **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

चतुर्थ अध्याय

महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण

* प्रस्तावना

महीप सिंह का समकालीन हिन्दी कहानीकारों में प्रमुख स्थान है। आज अपनी पीढ़ी के गिने-चुने कहानीकारों में उनकी अपनी एक विशिष्ट पहचान है। **"**नई कहानी कथा दौर से अब तक रचना प्रवृत रहकर, दशकों में बंटकर बहनेवाली कथा आन्दोलनों की तेज हवा और विभिन्न की छाया से दूर रहकर हिन्दी कहानी के जो नाम आज भी संदर्भ-च्युत नहीं हुए हैं, उन कतिपय में महीप सिंह का नाम उल्लेख है।**"1**

महीप सिंह ने कहानी के माध्यम से ही साहित्य में प्रवेश किया था। उनका कहानी साहित्य विशाल एवं समृद्रमय है। उन्होंने मुखयत: नगरीय महानगरीय संदर्भों को अपनी कहानियों में उभरते हुए अपने विशेष अंदाज में यथार्थ की पहचान और अभिव्यक्ति दी है। उनकी कहानियों सो द्रेश्य है। उनकी सूक्ष्म एवं पैनी दृष्टि में युग को देखने तथा परखने की क्षमता है। उनकी कहानियों जीवन के विविध यथार्थ को विविध आयामों को प्रकट करती है। मनुष्य को उसके स्व से जिन्दगी को जिन्दगी से अवगत कराती है।

कथावस्तु कहानी का मूलभूत तत्व है। कथानक घटनाओं का वह संगठनात्मक स्वरूप है, जिसके सहारे कहानी का सर्जन होता है। घटनाओं का संयोजन एवं सर्जन के लिए रचनाकार को सावधानी रखनी पड़ती है, क्योंकि कहानी की कथावस्तु को रचना की 'रीढ़' समान माना जाता है। महीप सिंह ने कहानी साहित्य में जीवन की यथार्थ और सजीव संवेदनशील का परिचय दिया है। सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति, मानवीय

संवेदना, जीवन और जगत के अनुभव, सतेज अंतर्दृष्टि तथा व्यापक सूझ-बूझ के कारण उन्होंने अब तक 113 से भी अधिक कहानियों की रचना की है, जिन्हें तीन खंडों में प्रकाशित कर हिन्दी साहित्य को प्रदान किया है, जो तीन खंडों निम्नलिखित है -

प्रथम खंड - "सुबह की महक"

द्वितीय खंड - "क्षणों का संकट"

तृतीय खंड - "संबंधों का सन्नाटा"

महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों वाली चुनी हुई कहानियों का विश्लेषण निम्नलिखित किया गया है।

4.1 महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्रों का चित्रण

(4.1.1) प्रथम खंड - "सुबह की महक"

"सुबह की महक" खंड सन् 1956 से लेकर सन् 1962 तक लिखी गई 39 कहानियों का संग्रह है। इस खंड का प्रकाशन प्रथम सन् 2000 में प्रकाशित किया गया है। इस संग्रह की कहानियों ज्यादातर अलग-अलग पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशित हो गई थी।

यह खंड का शीर्षक मनमोहक एवं बहोत सुन्दर है। "महक" एक मधुर एहसास है, जिससे जिन्दगी महकती है। मगर आज के इस आधुनिक युग में महानगरीय मध्यम परिवार की जिन्दगी इस एहसास से अंजान है। महानगर में जिन्दगी कभी सुबह की तरह खिलती हुई महकती है तो कभी द्वन्द्व, संकट, बिखराव, अनिश्चय संदेह से मुरझा जाती है। मनुष्य की जिन्दगी का हर क्षण संघर्ष की यंत्रणता से गुजरता है। यंत्रणाओं को झेलते हुए और उसीमें जिन्दगी को तलाशना उसकी नियति बन गई है। कहानीकार ने इस संग्रह की कहानियों में जिन्दगी कभी सुबह

की तरह महकती है, तो कभी दोपहर की तरह धधकती है, तो कभी श्याम की तरु मुरझा जाती है। कहानियों में बहु आयामी रंगों की छठा का हृदयस्पर्शी वणॅन हुआ है।

यह खंड में 39 कहानियों में चुनी हुई नारी पात्रों की कहानियों का चित्रण करने वाली कहानियाँ का विश्लेषण निम्नलिखित है।

(1) 'मैडम'

मैडम' कहानी की नायिका जिसे सब 'मैडम' कहते है - वह भी एक जटिल पात्र है। इस कहानी की मैडम एक वेश्या की लड़की है। जिसे समाज में सभी लोग हेय दृष्टि से देखते है। पुरुष समाज चाहता है कि वेश्या की लड़की वेश्या ही बने। पुरुष उसे हमेशा अपनी कामुकता की शिकार बनाना चाहता है, परन्तु मैडम अपनी माँ के पेशे से अलग जीवन जीना चाहती है और इसके लिए वह बहोत संघर्ष भी करती है। मगर हमारा समाज उसे सुधारने का मौका दिये बिना उसे फिर से वही दलदल में धकेलकर, उसकी भावनाओं से खिलवाड़ करता है।

मैडम मजबूरी में आकर एक बूढ़े सेठ से विवाह भी कर लेती है, लेकिन वह सेठ उसे सामाजिक रूप में उसे पत्नी का दर्जा नहीं दें सकता। वह मैडम को घर पर न रखकर एक होटल में रखता है। होटल में पति से दूर रहकर उसकी अनेक इच्छाएँ पूरी नहीं होती और इसी कारण वह होटल में रहने वाले लोगों से संबंध बना लेती है।

सेठ की रखैल होटल के एक कमरे में अकेले रहने वाली आसपास के कमरों के निवासियों से उसके सम्बन्ध, उसकी पढने की परिष्कृत रुचि, उसकी बातचीत में उभरकर आती स्नेहमयी छवि:यह सब उसे बहुत रहस्यमयी बनाता है। अन्य लोगों का कौतूहल उसके विभिन्न पुरुषों के साथ सम्बन्धों के इर्द-गिर्द ही चक्कर काटता रहता है, लेकिन नैरेटर जो

एक प्रोफेसर है उसकी विचित्रता के कारण तक पहुंचना चाहता है। मैडम उसे अपनी कहानी बताती है। वास्तव में उसका बचपन पिता या भाई के संरक्षण एवं स्नेह के बिना ही बिता है। वह पुरुष का सानिध्य पाना चाहती है लेकिन कभी वेश्या रह चुकी माँ की बेटी होने के कारण कोई पुरुष पिता या भाई तो क्या, विधिवत् पति बनने को भी तैयार नहीं होता है। इस स्थिति में वह आयु में कही बड़े सेठ की दूसरी पत्नी बनना स्वीकार कर लेती है पर सेठ उसे वह संग-साथ और स्नेह नहीं दे पाता जिसकी उसे आकांक्षा थी। वह अन्य निवासियों से सम्बन्ध बना लेती है। विवाहेतर यौन सम्बन्ध उसका चुनाव नहीं, उसकी स्थिति की विवशता हैं।

मैडम नैरेटर से इस विषय में स्पष्ट कहती है - **"**प्रोफेसर, मैं पुरुष का प्रेम चाहती हूँ, किसी भी शर्त पर, किसी भी मूल्य पर। आज मैं होटल के जिस कमरे में जाती हूँ लोग मुझे बैठाते हैं, मेरे साथ हंसते और बातें करते हैं क्योंकि इसके बदले में वे मुझसे कुछ अपेक्षा करते हैं। यदि उनकी वे इच्छाएं पूर्ण न हो तो दूसरे दिन से वे मुझसे बात तक नहीं करना चाहेंगे, अपने कमरे में पैर तक नहीं रखने देगें और मैं सारे दिन अपने ही कमरे में अकेली पड़ी मर जाऊँगी।**"2** यहाँ मैडम इतनी आत्मसजग है कि वह अपने मन का इतना सटीक विश्लेषण कर सकती है। मैडम जीवन की विषम परिस्थितियों से जूझकर सकिय होकर जीवन जीना चाहती है, यही उसकी सचेतनता है।

(2) 'उलझन'

यह कहानी पारिवारिक रिश्ते के दाम्पत्य के मधुर जीवन के संबंधों को प्रकट करती है। पुरुष प्रधान समाज की मानसिकता रही है, कि पुरुष को सिर्फ जीविका कमाने और स्त्री को घर चलाने की ज़िम्मेदारी होती है।

इस कहानी में कुछ तीन पात्रों है, महेन्द्रसिंह, सुरजीत और पप्पी उनकी बच्ची तीन पात्रों को केन्द्र में रखा गया है। स्त्रीओं को घर का काम करना, पत्नी का पति के अनुकूलन रहना और पुरुष का छोटे-मोटे काम के लिए स्त्री पर निर्भर रहना, जैसी बातों को निरूपित किया गया है।

महेन्द्रसिंह अपने कार्य के लिए अपनी पत्नी का सहारा लिया करता है। फिर भी पत्नी पर वह गुस्सा करता रहता है। जबकि सुरजीत पूरा दिन घरकाम और पति के अनुकूल होने का प्रयास करती रहती है। फिर भी महेन्द्रसिंह बिना किसी कारण सुरजीत को झिडकियाँ देता रहता है।

कॉलेज से लौटे महेन्द्रसिंह को सुरजीत ने बताया, “आज खाने में कुछ देर है। अभी बन नहीं पाया है।”**3** यह बात सुनकर महेन्द्रसिंह गुस्से में सुरजीत को भला-बुरा कहता है। जिससे सुरजीत बड़े दु:ख के साथ महेन्द्रसिंह को कहती है कि - “आप पुरुष लोग यह समझते हैं कि जिविका कमाने के लिए आप तो मेहनत करते हैं और स्त्रियाँ घर में बेकार बैठी रोटियाँ तोड़ती है। इसलिए घर गिरस्ती का और अपना जितना भी बोझ इन पर डाला जाए उतना ही ठीक। किन्तु हम औरतें घर में अपना दिन किस तरह से गुजारती है, यह हमें ही पता है। आपकी नौकरी तो कुछ घंटो की होती हैं, किन्तु हम चौबीस घंटे के नौकर हैं और ऐसे नौकर कि जिनके काम को काम नहीं समझा जाता है।”**4** इस प्रकार का शब्द सुनकर महेन्द्रसिंह मन ही मन सोचता है कि - “क्या कॉलेज के अलावा धर के लिए मेरी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है ? क्या सुरजीत ने ठीक नहीं कहा कि हम पुरुषों के काम के घंटे सीमित होते हैं पर स्रियाँ चौबीस घंटे की ग़ुलाम होती है ?”**5**

यह सब होने के बाद महेन्द्रसिंह के व्यवहार में परिवर्तन आ गया था। उन्होंने मन में ही निश्चय कर लिया कि अपने व्यक्तिगत छोटे-छोटे काम स्वयं कर लिया करेगा। स्वयं पानी भरकर नहाने जाना, अपने कच्छा-बनियान खुद धोना, जूतो पर पालिश करना आदि कार्य खुद करने लगे। सुरजीत यह सब देखकर चकित हो जाती है। यह क्रम कुछ दिनों तक चलता रहता है। यह सब देखकर सुरजीत को लगता हैं कि उसकी सेवा में कोई कमी के कारण उसका पति उससे दूर होता जा रहा है। कारणवश् दोनों के रिश्ते में तनाव सा छा जाता है। और एक स्थान पर सुरजीत अपने पति द्‌वारा प्रताड़ित होने पर अपना विद्रोही रुप प्रस्तुत कर देती है।

हमारी भारतीय नारी पति को परमेश्वर मानकर दिन-रात उसकी सेवा करना चाहती है। उनका सानिध्य चाहती है। आर्सूं रुपी अस्र चलाकर सिद्ध कर देती है कि पति के हर काम को सहर्ष करना वह जानती है। नारी किसी भी किंमत पर संबंधों को निभाना चाहती है। महेन्द्रसिंह मानते हैं कि, "तुम स्रियाँ को समझना तो शायद भगवान के भी बस में नहीं।"**6**

इस तरह 'उलझन' कहानी में एक छोटे से प्रसंग द्‌वारा दांपत्य संबंधों की मधुरिमा को प्रकट किया गया है। पति पत्नी के बीच सामान्य बात को लेकर जो पारिवारिक संबंधों में उतार-चढाव आता है।

(3) 'वेतन के पैसे'

यह पारिवारिक रिश्ते की कहानी है। इसमें हल्की सी आदर्शवादिता लक्षित होती है। इस कहानी में अर्थाभाव में जी रही नारी की मनोदशा का वर्णन किया गया है।

इस कहानी में गोपाल की पत्नी कमला चाहती है कि पति के वेतन पर उसका अधिकार है। क्योंकि पति वेतन के पैसे लाकर उसे नहीं देता, वह अपने पास ही रखता है तथा जो कुछ भी पैसे देता है उसका वह पूरा-पूरा हिसाब मांगता है। इसी कारण पत्नी दुखी है। पत्नी को सब कुछ स्वतंत्रता से निभाना चाहती है। ऐसा न होने पर दोनों के रिश्ते में दरार बड जाती है।

"अगले मास का वह जो वेतन लाया, उसें कमला के हाथों में न दे उसने अपने पास ही रख लिया, बड़े सहज और स्वाभाविक ढंग से। जैसे उसे उसकी कल्पना ही नहीं थी कि वेतन लाकर पत्नी के हाथों पर भी रखा जा सकता है। किन्तु कमला का हृदय इस वेदना से तिलमिला उठा। अलग होकर भी वह जैसे अपने छोटे से घर की रानी नहीं बन सकी।...... सच बात तो यह है कि स्री चाहती है कि कमाने का कार्य तो पति करे किन्तु उसे रखने और व्यय करने का सम्पूर्ण उतरदायित्व उसका हो एकमात्र उसका।"**7**

पति को अपने परम्परागत विरासत में मिले इन गुणों के कारण ही वह पति को पैसे रखने का अधिकार नहीं दे सकता। वेतन के पैसे के कारण दोनों के बीच में एक विचित्र सी स्पर्धा की भावना, अविश्वास, मनमुटाव, तनाव जैसे मानसिक अशांति छा जाती है। देर से ही सही पर अंत में गोपाल अपना व्यवहार को देखकर अपना दृष्टिकोण बदल लेता है कि घर में सुख-शांति और प्यार भरे वातावरण के लिए नारी की आर्थिक स्वातंत्रता एवं उस पर विश्वास करना ज़रुरी है। काफी देर बाद अपने पति से अपने अधिकार को पाकर पत्नी अपने घर-परिवार को स्नेह, प्रेम एवं विश्वास से सींचती है। पत्नी को यह अधिकार मिल जाने से उनके संबंधों की मधुरता बढ़ जाती है।

(4) 'एकस्ट्रा'

यह कहानी फिल्म जगत की लाइन से संबंधित है। इस कहानी में आज भी नारी पर होनेवाले शोषण को दर्शाया गया है।

सावित्री परिस्थितियों से त्रस्त हो जाती है। अपनी आर्थिक स्थिति को सृदृढ़ करने की इच्छा से वह हीरा नाम की लड़की के सहयोग से फिल्मों में एकस्ट्रा का काम तो पा लेती है और उसकी स्थिति सुधारने भी लगती है। परन्तु वह वहाँ पर काम करने वाले प्रत्येक पुरुष की नज़रों में कामुकता देखती है और यह स्थिति उसे आतंकित किए रहती है। अभी उसके "भविष्य के वैभवपूर्ण चित्र नेत्रों के सामने उभरते आ रहे थे कि उसने अनुभव किया कि वह चोपड़ा साहब की एक बाँह की लपेट में आती जा रही है.......जैसे कोई मासूम सी भेड किसी अजगर की लपेट में आती जा रही हो।"**8** फिल्म निर्देशक चोपड़ा सावित्री को दूसरा बड़ा रोल देने का लालच देकर उकसाते हुए उससे कुछ अपेक्षा व्यक्त करता है। चोपड़ा जी सावित्री का सानिध्य चाहता है। जब सावित्री इंकार कर देती है तो उसे एकस्ट्रा के रोल में भी वंचित किया जाता है और कहा जाता हैं कि, "भई सती-सावित्रियों के लिए हमारे पास कुछ काम नहीं है।"**9**

इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है कि फिल्म लाइन की अनैतिकता को उजागर करना। फिल्म लाइन में स्री को कुछ पाने के लिए अपनी मान-मर्यादा को दाव पर लगाना पड़ता है। उसीके सहारे रातों रात उन स्रियाँ का भाग्य बदल जाता है जो अपने आपको औरों के हाथ सौंप देते है। जो स्रियाँ इस काम से इनकार कर देती है तो उन्हें सती सावित्रि कहकर अपमानित किया जाता है। यहाँ पर यह व्यंग्य उभरा है कि फिल्म लाइन में किसी एक पुरुष की होकर रहने से काम नही बनता बल्कि हर पुरुष के मन को बहलाना ज़रुरी है। अन्यथा उसें इस लाइन

को छोड़ना पडेगा। सावित्रि अपने नाम की सार्थकता बनाए रखना चाहती है और उसे यह काम छोड़ना पड़ता है।

(5) 'एक स्री एक पुरुष'

यह कहानी में स्री-पुरुष के नये जमाने के संबंध उभर कर दिखाई देते हैं। आज के युग में स्री पुरुष के संबंधों में व्यापक परिवर्तन आया है। स्री किसी भी पुरुष के साथ कोई भी देखता है तो उसे वह गलत नजरीऐ से ही देखते है। सब हमारे समाज में उसे ही गलत समझते है।

इस कहानी में एक व्यकित अपने मित्र की पत्नी को लखनऊ से जानेवाली गाडी में से कानपुर आ रहे होते है। उनके डिब्बें में बैठे लोगों की जिज्ञासा उनके लिए बढ़ जाती है। यात्रा के दौरान उनके हर व्यवहार में एक सूक्ष्म सा अंतर प्रकट होता है। जाने ऐसा लगता हैं कि आपस में बहुत निकट होने पर भी मर्यादा की एक सूक्ष्म रेखा उनके बीच में खिंची हुई है। लेकिन गाड़ी में सभी लोग के मन में इन दोनों के प्रति जिज्ञासा, संदेह की भावना जागती है। कोई उस स्री को उस पुरुष की बहन प्रेमिका कहता है तो कोई उसकी पत्नी है ऐसे कहता है।

एक कहते है "अच्छा जोडा है। जोडा ?"**10**

दूसरा जो थोड़ा तार्किक सा था, तुनक कर बोला "तुम कैसे कह सकते हो कि ये पति पत्नी है ? सम्भव है कि इनमें कोई दूसरा सम्बन्ध हो।"**11**

तीसरा बोले "मानो आधुनिक शिक्षा पर अपना अन्तिम परिपुष्ट मत दे रहे हों और इन कालेजो यूनिवर्सिटियों की शिक्षा है ही क्या ? वहाँ लड़के पढने थोडे ही जाते है प्रेम व्यापार सीखने जाते है। और उनके अध्यापकों को मिलता हैं भारी वेतन। हमारे स्कूलों में, जहाँ लड़के

सचमुच पढ़ते हैं, हम रात दिन उनके लिए अपना सिर खयाते हैं, पर हमें चपरासियों से कम वेतन मिलता है।”**12**

पण्डिताइन का कहना है, “पता नहीं कौन जात है? मुझे तो इसके लच्छन कुछ अच्छे नहीं दिखाई देते। न मांग में सिन्दूर न पैर में बिछिया। साथ का मदुँआ पता नहीं इसका कौन लगता है।”**13**

लेखक यह बताना चाहते हैं कि आज भी किसी स्री-पुरुष को एक साथ देखते हैं तो हर किसी के मन में शक जाग जाता है। हम यह भूल ही जाते हैं कि वे भाई-बहन, पिता-पुत्री, पति-पत्नी या फिर अच्छे दोस्त भी हो सकते है। यह कहानी परिवेश की रुग्ण मानसिकता की और संकेत करती हैं,क्योंकि ऐसी बेतकल्लुफी मित्र की पत्नी के साथ चिंता का विषय है। आज स्री-पुरुष के बीच अनेक संबंध उभर कर आ रहे हैं, परन्तु अधिकतर लोग स्री-पुरुष संबंधों में यौन तत्व के अतिरिकत और कुछ सोच ही नहीं सकते है।

(6) ‘शास्त्री जी’

‘शास्त्री जी’ कहानी में शान्ता एक वेश्या है, एक पुरुष को नारी के प्रति सहज आकर्षण को अभिव्यक्त करती है। इस कहानी में गाँव, कस्बों में रामलीला, नौटंकी के माध्यम का मन लुभानेवाले पात्रों की भावात्मक मानसिकता का चित्रण किया गया है। शास्त्री जी रामलीला में परशुराम की भूमिका से काफी चर्चा में थे। वे नौटंकी की शांताबाई से जो एक वेश्या थी,प्रभावित होते है। शांताबाई के जीवन में एक अधूरापन है। वह कितनों से संबंध बना चुकी है और कितनों से संबंध बनाने बाकी है। वह किसी भी पुरुष को पूरा नहीं पा सकी है,क्योंकि जिसे भी पाती है,बहुत थोड़ा ही पाती है। शास्त्री जी के मन में भी स्री साहचर्य का भाव उमड़ता है। वे उसके प्रेमपाश में घिरकर व्यकित स्तर पर अनेक हिचकोले खाते

हुए दुविधा में पड जाते है। उसके प्रेम को अपने आदर्शों की झोंक में स्वीकार नहीं करते। उसे झेलना उनके बस की बात नहीं थी। यही टकराहट इस कहानी का केन्द्र बिन्दु है।

शास्त्री जी के नेत्र उसके चेहरे पर गड से गए। नौटंकी की उस नर्तकी उस वेश्या सदृश नारी के इस वाक्य में वेदना को हल्की-हल्की झंकार उन्हें सुनायी दी। उन्होंने उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया। बोले - "क्यों नहीं किसी एक को पा लेती ? ....और उसे इतना पा लो कि किसी और को पाने की जरुरत न रहे!"**14**

शान्ता ने अपना हाथ छुए लिया। एक विकृति सी उसके चेहरे पर दौड़ गयी। वह उठकर पानदान से पान निकालती हुई बोली - "में वेश्या हूं, पंडित जी। बहुतो को थोड़ा-थोड़ा पाने का अधिकार तो मुझे है।........एक को पूरी तरह पाने का अधिकार मुझे कब मिला ?"**15**

कुछ मास के बाद शान्ता का एक पत्र शास्त्री जी को मिलता है। आपके आशीर्वाद से भली चंगी हूं। आपने कहा था, "किसी एक को पूरी तरह क्यों नहीं पा लेती ?"**16** आपके जाने के बाद से उसी बात में लगी रही। अब लगता हैं, किसी को मैंने पूरी तरह से पा लिया है। बहुतो को तन से पाया है, उसे मन से पा रही हूँ।

इस तरह शान्ता को शास्त्री जी की यह बात गहराई तक प्रभावित करती है तथा शान्ता मन से किसी को अपनाकर वेश्या की धारणा अपने दिल से निकाल देती है। इस प्रकार शान्ता शास्त्री जी के व्यवहार से जीवन का एक आधार पाती है।

(7) 'पेरिस रोड'

यह कहानी वेश्यावृति से संबंधित है। बंबई में खार उपनगर की एक सड़क पेरिस रोड के नाम से पहचानी जाती है जहां हुस्न का बाजार लगा रहता है। स्त्रियाँ वहाँ ग्राहकों के संघ खड़ी रहकर अपना सौदा करती हुई दिखाई देती है।

इस कहानी में कुलवीर एक ऐसी स्त्री की पीड़ा से व्याकुल है जो अपने ही पति द्वारा देह व्यापार करने को मजबूर है। एक दिन वहाँ से गुजरते हुए कुलवीर रात के अंधेरे में एक ग्राहक के संघ बातचीत करती हुई सीताबाई को पहचान लेता है जो पहले उसके घर में काम करती थी। सीताबाई कहती हैं कि - **"**पैसों के कारण उसके पति ने मार पीटकर उसे यह काम करने पर मजबूर किया है।**"17**

कुलवीर अपनी कालोनी के पास हो रहे देह व्यापार के धंधे को कालोनी के लोग के साथ मिलकर बन्द तो करवा देता है। परन्तु अब उस स्त्री का पति धंधा बन्द होने से उसे मार-मार कर उसके शरीर को नीला कर देता है। इस पीड़ा को कुलवीर सहन नही कर पाता है। तभी कुलवीर सोचता है कि शहर के बीचोबीच फैले हुए इस गंदे व्यापार को तथा इस व्यापार की जड़ उस गंदी बस्ती को भी वहाँ से हटा ने के लिए अथक कोशिश करता है और सफल होता है। कार्पोरेशन के अधिकारियों की मदद से उस गंदी बस्ती की सफाई होती है। मुहल्ले के लोगों ने अपनी इच्छा व्यक्त की वहाँ पर एक बगीचा बनवा दिया जाय।

कुलवीर को कालोनी से यह गन्दगी साफ करने के एवज में उसे सम्मानित किया जाता हैं तो, **"**उसे हारो के फूल कांटो की तरह चुभ रहे थे, जय- जयकार में चीत्कार सुनाई पड रहा था। आज फिर सीता की उधडी हुई पीठ उसके सामने उभर आई थी। उधडी पीठ और बेंत के

निशान! एक बड़ा सा प्रश्नचिन्ह फिर उसके सामने आकर खड़ा हो गया था।”**18** यहाँ कुलवीर का उस स्री सीता से कोई नाता-रिश्ता नहीं है अगर है तो मानवता का। इसी कारण वह उसकी पीड़ा को देखकर दुखी होता है और यही मनुष्यता का सच्चा रिश्ता है।

इस तरह यह कहानी का उद्देश्य यह बताता है कि वेशावृती समाज के लिए एक धब्बा है जिसे जड़ समेत नष्ट अत्यावश्यक है। इस वृत्ति को कुछ स्रियाँ अपनी इच्छानुसार स्वीकार करती है तो कुछ मजबूरी में जैसे सीताबाई। पति ही अपनी पत्नी से यह वृत्ति करवाता है तो इससे ज्यादा शर्मनाक बात करता हो सकती है? समाज से इस गंदगी को नष्ट करने के लिए समाज के सभी नागरिक का सहकार भी होना आवश्यक होता है।

(8) ‘गमले का फूल’

यह कहानी प्रेम विवाह की कहानी है। लड़का लड़की दोनों अपने घरवालों के खिलाफ जाकर शादी के बाद दोनों के आपस में एक-दूसरे के आचार-विचार मेल खाते है। लड़के को लगता है कि पर पुरुष के साथ बातचीत करना लड़की के लिए अच्छा नहीं है। यहाँ पर लड़की अपने सारे अरमान दबाकर रखती है।

निर्मल घरवालों के खिलाफ अपनी इच्छानुसार रति से शादी कर लेता है। रति कुलीन परिवार से नहीं थी। इसीलिए निर्मल के घरवालों को इस शादी से आपती थी। कहानी में निर्मल को अपनी पत्नी रति का उन्मुक्त व्यवहार पसंद नहीं है। शादी के बाद एक दिन रति निर्मल के बचपन के मित्रों के संघ बैठकर ताश खेलती रहती है, जो निर्मल को बहुत खलता है। जब निर्मल घर पर नहीं होता है तब वह उसके दोस्तों के साथ खेलती है, तथा उन्हें चाय पिलाती है, उनका अतिथि सत्कार

करती है परन्तु निर्मल को उसका यह व्यवहार बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता है।

इसलिए उस पर बरसता है तथा उसकी इस आज़ादी पर बंदिश लगाता है। निर्मल कहता है "पर पुरुषों के साथ बैठकर ताश खेलने में तुम्हें लज्जा नहीं आती ? उसने जलती निगाहों से रति की ओर देखा। क्रोध और क्षोभ से उसके ओंठ कांप रहे थे। पर पुरुष. ....? रति ठंगी सी देखती रही वे तो तुम्हारे बचपन के मित्र है।"**19** पति की नाराजगी के बाद अब "रति कुलीन बन रही थी। उधान का खिला हुआ फूल लोहे के जंगलों से घिरे गमले में लगा दिया गया था। अब न वह उमगना था न वह चकना न वह चुहल थी न शेखी।"**20** निर्मल को पत्नी का व्यवहार पसंद नहीं है, जबकि पत्नी की नज़रों में इस व्यवहार में गलत कुछ भी नहीं है। विचारों में तालमेल न बैठने से उनके दाम्पत्य संबंध इतने मधुर नहीं बन पाते।

इस कहानी का उद्देश्य यह बताना है कि दाम्पत्य जीवन की बुनियाद विश्वास है। जब विश्वास डगमगाता है तो दाम्पत्य जीवन में दरार पड जाती है जिससे दूरीयाँ बढ़ जाती है। रिश्ते टूटकर बिखर जाते है। शक् एक ऐसी भयंकर बिमारी है जिसका कोई इलाज नहीं है। शक् हमेशा बर्बादी को आमंत्रित करता है।

(9) 'सतहें'

यह एक प्रेम कहानी है। निशा और दिवाकर एक दूसरे से प्रेम करते है। निशा एक परित्यकता स्री है। वह दिवाकर से शादी करना चाहती है।

निशा और दिवाकर दोनों की शादी भी तय होती है। मगर चक्रधर नामक दिवाकर का मित्र इन दोनों को जुदा करता है। चक्रधर इन दोनों के बीच रोड़ा बनता है, वह संकीर्ण मानसिकता का व्यकित है। इसलिए

नही चाहता है कि ये दोनों शादी करके सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत करे। जब दिवाकर एक महीने के लिए मैसूर गया हुआ था तो चक्रधर निशा को दिग्भ्रमित कर देता है, "और एक दिन उसने ऐसी बात कही कि मेरा मन दिवाकर की ओर से बिलकुल फिर गया। उसने बताया दिवाकर नपुंसक है और अपनी बात के समर्थन में उसने अनेक गढी हुई कहानियों मुझे सुना दी।"**21** दिवाकर के लौटने पर निशा उसका तिरस्कार करती है गालियां देकर अपमान करती है। कुर्ते की तरह दुत्कारती है। लेकिन चक्रधर के इस बहतावें का असर निशा के मन की भीतरी सतह तक नही पहुँचता। यह बात उसे तब समझ में आती है जब दिवाकर की शादी होती है। वह अपने व्यवहार से बहुत पछताती है।

निशा सहज ही चक्रधर की बातों पर विश्वास करके उससे दूर हट जाती है। दिवाकर की शादी हो जाती है तब जाकर निशा को चक्रधर की करतूत पर खूब गुस्सा आता है। क्योंकि वह उसके कारण न तो अपने जीवन में दिवाकर के साथ शादी करके खुशियाँ बाँट सकी, न ही किसी दूसरे व्यकित के साथ जुड पाई। परन्तु इतना सब कुछ होने पर भी वह सार्थकता के साथ जीवन जीती है। वह जीवन से विमुख नहीं होती है। वह दिवाकर के साथ किए गए अमानुषिक व्यवहार पर दु:ख भी प्रकट करती है। जब उसका दोस्त दिवाकर के पास भिलाई जाता है तो उससे कहती है "दिवाकर से कहना, मैं उसको बहुत याद करती हूँ। कहूँगा। वह कुछ खामोश बैठी रही। फिर बोली-नहीं, उससे मेरी कोई बात न करना। और सुनो........उसके लड़का हुआ है। मैं तुम्हें एक स्वेटर बनाकर दूंगी। मेरा नाम न लेना। उसे अपनी ओर से भेंट कर देना......।"**22** इस प्रकार निशा अपने अवसाद को कम करने के लिए दिवाकर को परोक्ष रूप से कुछ देकर सहज होने की कोशिश करती है।

इस कहानी का उद्देश्य यह है कि आज संबंधों के बीच विश्वास टूटता जा रहा है। स्रीयाँ दूसरों की बात सुनकर अपना ही बुरा करती है। दूसरों के बहकावे में आकर व्यक्ति अपनी बर्बादी को आमंत्रित कर बाद में पछताता है। देखने समझने और परखने के लिए जैसे व्यक्ति के पास समय ही नही है। जिससे संबंधों में बिखराव, तनाव, अजनबीपन जैसे विसंगतियों उभरती है।

(10) 'एक लड़की शोभा'

'एक लड़की शोभा' कहानी सामाजिक परिवेश से जूझनेवाली मनोवैज्ञानिक कहानी है। शोभा हीन भावना से ग्रस्त है। वह स्वयं को अपनी बड़ी बहन और छोटी बहन से कम सुन्दर और कम समझदार समझती है। शोभा का परिवार बड़ा होने के कारण किसी को उसकी इस तरफ ध्यान नहीं जाता है। वह किसी से बात करने में घर से बाहर जाने में या फिर अपने आपको अभिव्यक्त करने में कतराती है।

महीप सिंह ने इस कहानी में उपरोक्त बात का निरुपण किया है। शोभा एक अध्यापक की लड़की है। उसके अलावा परिवार में दो छोटी बहने और छोटा भाई भी है। शोभा की माँ जीवित नहीं है। वह बड़ी होने के नाते घर परिवार की सारी ज़िम्मेदारी उस पर आ जाती है।

कुछ दीनों के लिए शोभा का परिवार छुट्टियाँ के दिनों में मसूरी घूमने जाते है। दूसरी और कथानक भी अपना थिसिस लिखने (शोधार्थी) मसूरी में जाते है। वहाँ यह दोनों के कमरे बगल-बगल में ही है। इसलिए कथानायक शोभा के परिवार के संपर्क में आते है।

शोभा को छोटे भाई-बहन मसूरी में घूमते फिरते और बहोत ही आनंद करते है। मगर शोभा पूरा दिन घरकाम में ही व्यस्त रहती है। "सुबह जलपान करने बाद उसकी छोटी बहने रजनी और बिल्लो स्केटिंग

के लिए चली जाती है। अध्यापक साहब अपने कमरे के दाहिने ओर के खुले हुए भाग में अपनी कुर्सी-मेज डालकर उत्तर पुस्तिकाओं में जुट जाते। छोटा भाई अपने बराबरवालों के साथ खेलने निकल जाता। और शोभा रह जाती अकेली।"**23** शोभा पूरा दिन काम में व्यस्त रहती है। फिर भी वह परिवार में उपेक्षित ही रहती है। शोभा अपने शब्दों में कहती है कि - "और नहीं तो क्या ? मुझमें है ही क्या ? सभी तो मेरा मज़ाक उड़ाते है। आपने भी उड़ाया तो कोई बात नहीं है।"**24**

यह सब देखकर मेसूरी में पड़ोस में रहने वाला शोधार्थी शोभा में आई हीनग्रंथि को दूर करके उसे सकारात्मक जीवन जीने के लिए प्रेरित करते है। शोभा की समस्या को समझकर बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से उसे उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं से परिचित करता है। उसके अन्दर आत्मविश्वास जगाने लगता है।

कहानी का 'मैं' उसे उसके सीमित घेरे से बाहर लाने का प्रयास करते हुए कहता है "पता नहीं क्यों तुम अपने संबंध में इस प्रकार के विचार रखती हो। सच कहूँ तो तुम्हारे फीचर्स तुम्हारे घर में सबसे अच्छे हैं। तुम्हारा थोड़ा सा स्वास्थ्य और अच्छा हो जाए तो तुम घर में सबसे सुन्दर दिखोगी।"**25** धीरे-धीरे शोभा के जीवन में एक नयापन तथा ताज़गी आने लगती है। वह घर में के सीमित दायरे से निकलकर बहनों के साथ घूमने भी जाने लगती है तथा अपनी सुन्दरता के प्रति भी सजग हो जाती है। वह एक नीरस जीवन को त्याग कर सरस जीवन जीने लगती है। उसे हमउम्र युवकों की नज़रों में अपने प्रति आकर्षण दिखाई देने लगता है। वह हसते खेलते खुश रहा करती है। स्केटिंग रिंग में हमेशा धूर-धूर कर देखनेवाले एक लड़के का पिता उसके लिए रिश्ते की बात करने आता है तो वह इनकार कर देती है। उसके इस इनकार से शोधार्थी को वह महसूस करता है कि इसका आत्मविश्वास बढ़ा है और

बहुत ही सबल है। और वह कहता है कि - "अच्छा किया। हर लड़की को अपने विवाह से पहले दो-तीन लड़कों को रिजेक्ट करना ही चाहिए। उससे उनमें अपने प्रति विश्वास बढ़ता है।"**26** शोभा की शादी हो जाती है। एक दिन अचानक एक रेस्तरां में शोभा को उसके पति के साथ शोधार्थी देख लेता है। शोभा के बदले हुए हावभाव, रंग-ढंग देखकर उसे लगता हैं कि - "किसी बंधे और कोई से भरे तालाब को उमगती नदी में बदल दिया गया है।"**27**

इस प्रकार शोभा 'मैं' के प्रयास से जीवन को जीना और जानना सीखकर एक सार्थक जिन्दगी जीती है। तथा कहानी का मैं एक पड़ोसी के नाते अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए शोभा में जीने की ललक पैदा करके सामाजिकता का परिचय देता है। विषम परिस्थितियों में जीवन को जीना और जानना तथा किसी को सकारात्मक जीवन जीने के लिए प्रेरित करना ही दृष्टि है।

यह कहानी में बिना माँ के परिवार में बड़ी लड़की की स्थिति को आलेखित किया गया है।

(11) 'काला बाप गोरा बाप'

यह कहानी तलाक़शुदा पति-पत्नी को मानसिक उथल-पुथल को बताती है। खून में दूरी होती जा रही है। इन परिवर्तित संबंधों की वजह से संयुक्त परिवार में विधटन आया है। विधटन का प्रभाव माता-पिता या भाई-भाई तक सिमित न रहकर पति-पत्नी और छोटी उम्र के संतानों के बीच भी दिखाई देता है। इस विधटन की स्थिति से नारी विशेष रूप से प्रभावित होती है। पुरुष नारी को उपभोग की चीज मान रहा है। नारी पुरुष के शोषण का शिकार बनती है। यदि नारी शोषण का विरोध करे तो उसे अस्तित्वहीन बना दिया जाता है।

यह कहानी की जमीला जीवन से मुँह मोडने वाली स्री नहीं है। जमीला अपने पति से परित्यकता है। जमीला का पति यूनुस जब उसे दो लड़कियों के साथ दिल्ली में अकेला, बेसहारा छोड़ा जाता है और दूसरी शादी कर लेता है। वैसे तो जमीला अपने पति के अनुशासन में रहनेवाली पतिव्रता स्त्री थी। जमीला के शब्दों में "तुम्हारी वह जमीला जो पराये मर्द की छाया भी नहीं देखती थी। बुरखे के बगैर धर से बाहर पैर भी नहीं रखती थी। उसके मुंह से ज़ुबान है यह तो तुम भी नहीं जानते थे।"**28** यूनुस का समीना से दूसरी शादी कर लेने पर जमीला बेसहारा हो जाती है। जमीला हिम्मत नही हारती बल्कि जीने की ललक से अपने परिचित अनवर नामक युवक से शादी करके जिन्दगी के एशो-आराम लूटती है। शादी के जमीला अपने पूर्व पति यूनुस को अनवर के बारे में पत्र लिखती है, "अनवर की बात बताती हूँ। मासूम जमीला को जब तुम दुनिया की ठोंकरे खाने के लिए छोड़ गए तब यही अनवर उसका सहारा बना।"**29**

जमीला के जिन्दगी में दस साल बाद यूनुस जीर्ण-शीर्ण अवस्था में जमीला के पास लौटता है। यूनुस समय के थपेड़े खाकर उसकी जिन्दगी में एक बार फिर आता है तो जमीला को उससे न तो इतनी शिकायत है न ही अफसोस क्योंकि अभी उसका जीवन समृद्ध है। जमीला एक संस्कार शील महिला है। वह उसका अतिथि सत्कार करती है परन्तु उससे दुबारा संबंध नहीं बनाना चाहती,लेकिन ऐसा भी नहीं है कि पूर्व संबंध बिल्कुल ही टूट गया है। जमीला यूनुस को दूर का रिश्तेदार कहकर सबसे परिचय करा देती है। यूनुस उस घर में किसी की दया का, किसी की खीज का तो किसकी उपेक्षा का पात्र बनता है।

यूनुस जब जमीला से मिलता है,तब उसे लगता है, "वह उससे कुछ गज़ के फासले पर थी, परन्तु यूनुस गजो का लग रहा था, जैसे यह फ़ासला कुछ गजो का नही है। केवल फ़ासला है। ऐसा फ़ासला जिसे

नापने के लिए गज़-मिल कुछ बने ही नही है।"**30** यधपि जमीला यूनुस का प्रत्यक्ष रूप से तिरस्कार नही कर पाती। वह उसे अतीत की यादें, बच्चों की तस्वीरों का परिचय, खाना लगाना, अलग कमरें में सोने का प्रबन्ध आदि तरह से यूनुस के प्रति सहानुभुति प्रकट करती है।

जमीला की छोटी बेटी यूनुस का अपमान करती है यह बोलती है कि - "अम्मी देखो न यह बुड्ढा मेरी किताबें खराब कर रहा है। शहनाज रुआंसी होकर मां के कमरे की ओर देखती हुई चिल्लाई। 'अरी क्या है? कहती हुई जमीला उस कमरे में आ गई। यूनुस हक्का-बक्का सा देख रहा था। शहनाज रोनी आवाज़ में उसी तरह बोले जा रही थी, देखो न यह बुड्ढा.....।"**31** यह सब सुनकर जमीला उसे डाटते हुए कहती है कि - "चुप बदतमीज। जमीला फट-सी पड़ी, अपने बाप को ऐसा कहते शर्म नही आती ?"**32** इससे जाहिर होता है कि जमीला में एक भारतीय स्री के संस्कार भी है, वह पति के प्रति पैदा हुए भावनात्मक लगाव को भुला नही पाती। परन्तु उसमें इतनी शक्ति भी है कि वह उसके बिना भी सकारात्मक जिन्दगी जी सकती है तथा उसे अपने जीवन में पुन:स्वीकृति नहीं देती व उसे वापिस जीने के लिए 'पंजाब मेल' पकडवा देती है।

इस तरह यह कहानी में जमीला जीवन की इन विषम परिस्थितियों में विचलित नहीं होती, जीने के लिए संघर्ष करती है तथा अपने पूर्व पति यूनुस के साथ वाली जिन्दगी से भी अच्छी जिन्दगी जीती है। कहानीकार महीप सिंह ने यहाँ पर दर्शाया है कि जमीला उस परम्परागत पर घुट-घुट कर मरती हुई दर-दर की ठोकरे खाती फिरे। जमीला जीवन की मझधार में अकेली पड़ने पर गुमराह नहीं होती बल्कि परिस्थितियों से जूझते हुए जीवनोन्मुख होती हुई अपनी सचेतन दृष्टि का परिचय देती है। क्योंकि वह जानती है जीवन जीने के लिए मिला है,घुट-घुट कर मरने के लिए देती है। वह अपने संबंध विच्छेद पति के प्रति भी आदरभाव रखती है।

यह कहानी में एक ओर पति की असहायता उभरी है तो दूसरी और पत्नी की विवशता, खीज, दया, सहानुभूति उभरी है। दोनों के अलगाव के बावजूद भी बचे हुए एक हल्के से रिश्ते पर प्रकाश डाला गया है।

(12) 'विपर्यय'

महीप सिंह की यह कहानी एक असफल प्रेम कहानी है। कहानी में बोल्ड लड़कियाँ है जो प्रेम से धोखा खाती है। वह आत्महत्या करने का सोचती है।

दिनेश और रत्ना, माला और सतबीर प्रेमी प्रेमिका है। दिनेश तथा माला प्रेम में धोखा खाते है। रत्ना किसी पैसेवाले से शादी करना चाहती है और सतबीर अपने माता-पिता के विरोध में माला से शादी नहीं करना चाहता। उन दोनों का कहना है कि यह प्रेम नहीं सिर्फ दोस्ती थी, हमदर्दी थी। दिनेश और माला असफल प्रेम के कारण आत्महत्या करने की सोचते है। दोनों मिलकर मरने के लिए विविध योजनाएँ बनाते-बनाते एक दूसरे के निकट आते है। यही तो विपर्यय है।

दोनों लड़कियाँ संबंधों के टूट जाने पर खुद टूटती नहीं है। मगर वह सुविधानुसार अन्यत्र संबंध बना लेती है। उन्हें जब लगता है कि इस पुरुष से विचारों का तालमेल ठीक से नहीं बैठ रहा तो वे नया जीवन साथी चुनने में नही झिझकती इसलिए प्रोफेसर कहते है **"**हम लोग समझते हैं स्रियॉ बहुत भावुक होती हैं, यह ठीक भी है। पर इस भावुकता के साथ-साथ उनमें अपने लिए एक व्यवहारिक दृष्टिकोण भी होता है। हर लड़की प्रेम के साथ-साथ जीवन में सुरक्षा चाहती है, विशेष रूप से आर्थिक सुरक्षा।**"33**

इस कहानी का उद्देश्य है कि प्रेम में धोखा खाये हुए प्रेमी-प्रेमिका जीवन से निराशित होकर आत्महत्या करना चाहते हैं, लेकिन भगवान की

लीला कुछ निराली है जो इन दोनों को मिलाकर मृत्यु से जीवन की और उन्मुख कर देता है। एक दूसरे के साथ ग़म भुलाने में मदद करता है।

(4.1.2) द्वितीय खंड - “क्षणों का संकट”

कहानीकार नें द्वितीय खंड “क्षणों का संकट” सन् 1962 से लेकर सन् 1972 तक लिखी गई 39 कहानियाँ का संग्रह है। इस खंड का प्रथम संग्रह सन् 2000 में प्रकाशित हुआ है। कहानियाँ अलग-अलग पत्र-प्रत्रिकाओं में प्रकाशित की गई है।

‘क्षण’ का मतलब समय का अभेध भाग है। समय कभी कभी सुख-दुख के अवसर पर यही क्षण युग से प्रतीत होते है। यही समय कभी मनुष्य को बर्बादी पर ले जाता है या फिर मनुष्य को कभी सफलता की ऊँची नीव पर ले जाते है। इस आधुनिक युग में नगरों में क्षण एक ओर मूल्यवान है तो वही दूसरी ओर संकट दायक भी है। बीभत्स, संकटमय, यातनामय एवं त्रासदायक सिद्ध हो रहा हैं जिससे मनुष्य भीतर ही भीतर टूटकर सिमटता जा रहा है। वह चाहकर भी इस यातना से मुक्त नहीं हो पाता क्योंकि वह महानगरों की देन है जिससे जूझते के लिए वह विवश है। कहानीकार ने क्षणों का संकट को अच्छी तरह समझकर विविध विषयों के माध्यम से इस खंड में सुन्दर कहानियाँ के द्वारा प्रस्तुत किया है।

यह खंड में कुल 39 कहानियाँ में से चुनी हुई नारी पात्रों की कहानियाँ का चित्रण करने वाली कहानियाँ का विश्लेषण निम्नलिखित है।

(1) ‘झूठ’

यह कहानी पति-पत्नी के साथ बीच की एक सामाजिक कहानी है। जिसमें पति शादी के बाद भी एक लड़की के साथ संबंध बनाये रखता है।

यह बात का यहाँ पत्नी को बहोत बुरा लगता है। वह यह बिलकुल सहन नही कर पाती है।

झूठ के कारण पति-पत्नी के बीच तनाव पड जाता है। एक दिन अरुप को अपनी महिला मित्र का पत्र आता है। यह बात अरुप की पत्नी शालिनी को पता चल जाता है। जो अरुप का विवाह के बाद भी इला नामक लड़की से रिश्ता बनाया रखा है।

शालिनी में उसके संबंध में गहरा संदेह घर कर गया है। यदि वह उसे वह पत्र दिखा ही देता तो क्या हो जाता ? इला उन दिनों अपनी ससुराल से मायके आई थी। शालिनी ने उसे उसके घर बुलवाकर अपना दरवाज़ा बंद कर लिया। शालिनी हाथ में छडी लेकर सामने पलंग पर बैठी इला से पूछा - "तुमने उन्हें पत्र लिखा हैं ?"**34** इला बुत बनी बैठी रही। बड़ी मुश्किल से इला अपना सिर हिलाकर हाँ में जवाब दिया है। फिर शालिनी उस पर बरस जाती है।

दूसरे दिन इला ससुराल चली गई। जाने से पहले शालिनी को मिलने आई - "भाभी! बरसात उसकी आँखों में उमड़ी हुई थी- माफ़ कर दोगी ?"**35** शालिनी स्टोव पर चढी हुई सब्जी को हिलाती हुई चुप रही। फिर धीरे से बोली - "अपने घर में मन लगाओ ....उसी में सुख ढूंढों।"**36**

छह महीने बाद अचानक अरुप के दफ्तर में इला का पत्र मिलता है। इला लिखती है कि - "सोचा था की कभी तुम्हें पत्र नहीं लिखूगी। परन्तु तुम्हारी मदद के बिना किसी भी काम में सफल हो सकूंगी इसका विश्वास नहीं है। इस धर में मुझे सुख ढूंढने में भी क्या तुम मेरी मदद नहीं कर सकते ?"**37**

उस पत्र का उत्तर अरुप ने लिखा। बात कोई ऐसी नहीं थी फिर भी वह शालिनी को बता नहीं सका की इला को पत्र लिख रहा हूँ। क्योंकि शालिनी नें चेतावनी दी थी की इला को - "फिर उन्हें कोई पत्र न लिखना।"**38** यह सब शालिनी देख लेती हैं तो उन्हें सदमा लगता है और वह हिस्टीरिया का शिकार हो जाती है। उसके होश में आने के बाद अरुप एक और झूठ बोलता है कि वह पत्र उसने उसके बड़े भाई को लिखा था जो बड़ी परेशानी में है। उसके इस दूसरे झूठ को शालिनी सच समझती है और ठीक हो जाती है।

यह सब स्थिति को अरुप सामान्य में लाता तो है मगर "अरुप को लगा उसने तीखे विष की बहुत सी उल्टीयाँ की है। उसकी नस-नस में उसको चारों ओर विष ही विष भर गया है। विष के तीखेपन को दूर करने के लिए वह घंटो घूमता रहा। चाय-कोफी के दसों प्याले पी गया। एक अड्डे पर जाकर आध पांव ठरा शराब भी पी गया, परन्तु विष था कि उसके अंग-अंग को उमेंठें ही जा रहा था।"**39**

यह कहानी में दोनों पति-पत्नी के रिश्तों को उभारा गया है। दोनों पति-पत्नी होते हुए भी दोनों के विचारों में बड़ा अंतर दिखाई देता है। अरुप बड़ा स्वार्थी, झूठा और संवेदनहीन है। वह अपने स्वार्थ के खातिर झूठ का सहारा लेता है। शालिनी निस्वार्थी, भावुक और पतिव्रता है।

(2) 'परवरिश के लिए'

यह एक सामाजिक कहानी है जो नारी शोषण पर प्रकाश डालती है। पदमा नामक लड़की कहानी में शोषण का भोग बनती है और वह कुछ नहीं कर पाती है।

कहानी में पदमा नामक लड़की की मजबूरी यह है कि घर में उसके सिवा बूढ़ी माँ कमाने वाली है, अत:यह देखकर वह उसे काम से निजात

देकर खुद काम करने लगती है। वह फिल्म लाइन में एकस्ट्रा का काम करने लगती है। चंदा पदमा की सहेली थी। सहेली ही नही, फिल्म लाइन में वह पदमा की गुरु भी थी। पिछले साल जब पदमा अपनी माँ के साथ कही से आकर उसकी चाल में एक खोली लेकर रहने लगी थी तो उसी ने पदमा को एक से दूसरे एकस्ट्रा सप्लायर के पास ले जाकर मिलाया और कुछ काम दिलाया था।

एक दिन पदमा उसी तरह उमगती हुई और चंदा की जांघ पर हाथ मारती हुई बोली - "बस चंदा आज तो मज़ा ही आ गया।"**40** चंदा तिनकती हुई बोली- "अरे बोले फूटेगी भी या बस......मज़ा आ गया बके जाएगी।"**41** एक नजर उसने सब पर फेंकी और फिर चंदा की ओर मुंह करके बोली- "तुझे मालूम है न चंदा आज हमारे यहां क्लब डान्स की शूटिंग होनी थी। बस आज की शूटिंग में तो मज़ा ही आ गया। आनंद तो बस मेरे साथ ही नाचता रहा।"**42** आनंद बहोत बड़ा हिरो है। वह चंदा को अपने प्रेम जाल में फंसा लेता है। चंदा भी आनंद के प्रेम में अन्धी बन जाती है इस तरह की वह सब कुछ भूल जाती है। आनंद को कहकर पदमा उसकी फिल्म में चंदा को भी काम दिला देती है। धन की लालसा व हीरो के साथ काम करने की लालसा उसे इन संबंधों की तरफ अग्रसित करती है।

अब तो बहुत से लोग मानने लग गए थे कि पदमा आजकल आनंद के नज़दीक है। लोगों ने उसे उसकी मोटर में भी देखा था। उसके प्राइवेट फ्लैट पर भी देखा। कुछ लोग तो यह भी कहते थे कि पदमा आनंद के महाबलेश्वर वाले बंगले पर भी एक हफ्ता रह आई है। परन्तु फिल्मी दुनिया में कोई किसी से प्यार-व्यार तो करता नहीं। अक्सर दो लोग निकट आ जाते है, जैसे तेज़ दौड़ती रेलगाड़ी से दूर-दूर भागती हुई। रेल की पटरिया नज़दीक आती दिखाई देती है, कुछ देर साथ दौड़ती सी

लगती है, कभी-कभी एक दूसरे को क्रॉस भी कर जाती है और फिर दूर चली भी जाती है। पदमा भी तो कितनी बदल गई थी। उसका शरीर भर गया था। उसका रंग भी निखर आया था। उसकी चालढाल की तब्दीली के साथ ही उसकी बातचीत में कितना विश्वास उतर आया था। पदमा आनंद की दुनिया के कुछ नज़दीक हो गई थी। परन्तु अपने चारों और की दुनिया से बहुत दूर हो गई थी।

कुछ दिनों के लिए आनंद अपनी फिल्म की शूटिंग के लिए कश्मीर चला जाता है। पदमा साथ नही जाती है, क्योंकि वहाँ पर पदमा जैसी एकस्ट्राओ का कोई भी काम न था। उसी समय पदमा को पता चलता है की वह आनंद के बच्चे की माँ बनने वाली है। यह बात वह चंदा को बताती है चंदा तब बोलती है कि- “ले भुगत अब अपने किए का फल। ऐसी हालत में कौन तुझे काम देगा और क्या काम तू कर सकेग। पर तुझे काहे की फिकर है। एक बड़े हीरो के बच्चे की तू माँ बनने वाली है। मज़े से पलंग पर टांगे पसार कर तू आराम कर।”**43** दो पल के लिए पदमा के भी मन में आया- हाँ फिकर किस बात की है। आनंद जो है। वह तो अपनी शूटिंग के लिए कश्मीर गया है। अब क्या करे ? वह माँ बनने वाली है यह बात पदमा की माँ को मालूम हुआ तो पदमा का झोंटा मरोड़ दिया - “कलमुंही अब काम कौन करेगा ? और काम नही करेंगी तो धर की गुज़र बसर क्या आसमान से उतरकर तेरा बाप चलाएगा।”**44** तब पदमा बड़े विश्वास से बोली - “आनंद साहब को आ जाने दे माँ। सब ठीक हो जाएगा।”**45**

दो-ढाई महीने बाद आनंद वापस आया तो बड़ी मुश्किल से पदमा उससे मिल पाई। मिलने के बाद पदमा चुप रही, फिर धीरे से बोली - “में माँ बनने वाली हूँ।”**46** आनंद चौक जाता है, फिर आनंद कहता है कि- “पागल हुई है ? "आनंद के तेवर बदल गए। टाई की नाट कसता हुआ

वह बडबडाया -"सस्ती लड़कियों को मैं इसीलिए मुंह नहीं लगता। पता नहीं किसका पाप मेरे गले मढने आ गई है।"**47** पदमा की आँखें भर आती है। इस प्रकार आर्थिक मजबूरीवश स्री इन संबंधों में पडकर अवमानना को सहती है। पदमा जब वहाँ से निकलती है तो आनंद पैसे का बंडल देकर कहता है कि यह रूपये बच्चे की परवरिश के लिए है।

इस तरह यह कहानी का उद्देश्य यह है कि धनी लोग निर्धन लड़कियों को लालच देकर अपनी हवस का शिकार बनाकर, ठुकराकर किस प्रकार उसकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करते है। पुरुष नारी को रूपयों से खरीदनेवाला खिलौना समझता है। मन बहलाने के बाद बड़ी बेहदी से उसे ठुकराकर उस पर शोषण करता है।

(3) 'ब्लाटिंग पेपर'

इस समय के बदलते परिवेश में स्री पुरुष के प्रेम संबंधों में भी परिवर्तन पाया जाता है। दोनों के बीच प्रेम में एक सूत्रात्मकता होनी चाहिए वह नही दिखाई देती। आजकल प्रेम में नैतिक मूल्य न मानते हुए, केवल प्रणव संबंध तक सीमित माना जाने लगा है। स्री-पुरुष में से किसी एक का विवाह किसी और से हो जाए तो दूसरे की स्थिति खूब दयनीय बन जाती है। जिसके फलस्वरूप प्रेमियों में निर्णय-अनिर्णय का द्वन्द्व चलता रहता है। इसी मानसिकता में प्रेमी अपने आपको अस्वस्थ और महत्वपूर्ण निर्णय करने में असमर्थ सा महसूस करते है।

इस कहानी में बार-बार संबंध से धोखा खाकर टूटती फिर भी आशाभरी दृष्टि से एक अन्य पुरुष की तलाश में जुटी प्रीति की मन की पीड़ा को उकेरा गया है। प्रीति प्रारंभ में प्रेम और वासना के भेद को नही जान पाती है। जब वह जानने लगती है तब वह अपने आपको ब्लाटिंग पेपर की संज्ञा देती है।

यह कहानी 'ब्लाटिंग पेपर' में प्रीति के प्रेम संबंधों और जगदीश से प्रेम संबंध स्थापित होते है और कुछ दिनों बाद बिखर जाते है। तीनो प्रेमियों में से प्रीति किसी के साथ विवाह नही कर पाती है। शारीरिक संबंध बांधने के लिए प्रीति ने अपने तीनों मित्रों को कभी भी इनकार नही किया था। वे तीनों हर आये दिन प्रीति से विवाह के झूठे वादे किया करते है। यह परिस्थिति के मानसिक और शारीरिक संतुलन खो बैठती है। इसी कारण वह अपनी पढ़ाई भी पूर्ण नही कर पाती है। बी.ए के दौरान लगातार दो साल तक परीक्षा नहीं दे पाती। प्रीति के ही शब्दों में- "मैं शायद आगे पढ़ूँ......इन छुट्टियों में शायद मेरी शादी हो जाए।"**48** मगर प्रीति की शादी निर्धारित समय पर नहीं हो पाती है, जिससे वह हर समय मानसिक तनाव सहन करती है।

पहला प्रेमी प्रीति का समीर है, जो नाटक का अच्छा आर्टिस्ट है। प्रीति ने कई बार समीर के नाटक में छोटा मोटा रोल किया था। वह दोनों एक-दूसरे को चाहते हैं, किन्तु विवाह के प्रस्ताव को वह यह कहते हुए टाल देता है - "शादी आर्टिस्ट के लिए बड़ी मुसीबत है। हम लोग बस मुहब्बत करें। शादी के चक्कर में न पड़े।"**49** यही कारण से प्रीति को समीर के साथ शादी नहीं हो पाती है।

दूसरा प्रेमी मनोहर है, जो कॉलेज मे केमेस्ट्री का अध्यापक है। मनोहर के साथ प्रीति का प्रेम संबंध इतना आगे बढ़ा कि दोनों साथ में घूमना-फिरना, प्रेमपत्र लिखना, होटल-रेस्तरां में जाना आदि चलता रहता है। जिससे एक क्षण तो लगता है कि प्रीति और मनोहर के प्रेम संबंध विवाह में परिणत हो जाएँगा। लेकिन मनोहर प्रीति के द्वारा किया गया शादी के प्रस्ताव को टालता ही रहता है। प्रीति मनोहर से सच्चा प्रेम करती है, लेकिन मनोहर "लाज और कमला इन दोनों लड़कियों से उनके

सम्बन्ध बहुत बढ़ गए है।"**50** यह संबंधों का कॉलेज के प्रिसिंपल को पता चलता है और उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है।

इंजीनियर नामक लड़का प्रीति के जिन्दगी में तीसरा प्रेमी आता है। जिसका नाम जगदीश है। जगदीश के साथ भी प्रीति के प्रेम संबंध बहोत गाढ बन जाते है। जगदीश तो प्रीति के साथ जून तक का शादी का वादा भी करता है। परन्तु जगदीश भी किसी कारण से अपना वादा नहीं निभाता है और वह दिल्ली चला जाता है।

इस तरह बहोत से लोग प्रीति की जिन्दगी से डंका बजाते हुए निकल गए थे। अंत में हताश होकर प्रीति अपनी डायरी में लिखती है- "इच्छा होती है कि किसी अन्धे आदमी से शादी कर लूँ। दूर नदी के किनारे एक गाँव में अपनी झोंपड़ी डाल लूँ। फिर उस अन्धे की इतनी सेवा करुं कि उसे लाठी की भी जरुरत न रहे। बात- बात में वह मुझे पुकारे ......प्रीति ....प्रीति । और में बार- बार अपने हाथ का काम छोड़कर उसके पास दौडी चली आऊ। उसके लिए मैं सबसे ज़रुरी चीज बन जाऊँ। पूरे विश्वास के साथ वह अपने को मुझे सौंप दे एक बच्चे की तरह.....निश्शंक होकर।"**51** इस तरह अंत में प्रीति झूठे और स्वार्थी प्रेमियों से परेशान हो जाती है।

इस प्रकार प्रीति अपने प्रेमियों के झूठे प्रलोभन, वायदों से उपेक्षित होकर कहानी के आरम्भ से अन्त तक निर्णय-अनिर्णय के संघर्ष में झूलती है। 'ब्लाटिंग पेपर' कहानी में पुरुष की स्वार्थपरिता, कामपिपासा एवं मूल्यहीनता का चित्रण हुआ है। स्री की लाचारी, निश्चलता, विश्वास और समर्पण का सफल चित्रण हुआ है। यह उपभोक्ता समाज की देन है कि आज हर संबंध एवं उसके भावनाएँ मात्र उपभोग की सामग्री बनकर रह गये है।

(4) 'उजाले के उल्लू'

आज के बदलते समय में स्री- पुरुष के प्रेम संबंध जटिल बनते जाते है। पहले की तरह दोनों के बीच भावात्मकता दिखाई नही देती है। ज्यादातर प्रेम संबंधों में एक-दूसरे में यौन उपभोग को महत्व दिया जा रहा है।

इस कहानी में कुलदीप और तोष के बीच प्रेम संबंध स्थापित किये गए है। जो एक-दूसरे के प्रति प्रेम के खोखलेपन को प्रस्तुत करता है। यह दोनों का विवाह पूर्व संबंध बनाने का उद्देश्य केवल जीवन में वक्त बिताने व मस्ती करने का ही होता है। दोनों एक दूसरे से वफ़ादार नही है। दोनों प्रेम करते है, मगर सच्चा वाला नहीं होता है।

यहाँ पर कुलदीप कंपनी में एकाउंट लिखता है और तोष स्कूल में नौकरी करती है। इन दोनों का पहला परिचय रेसकोर्स पर होता है। इस दिन के बाद इन दोनों का मिलना-जुलना बढ़ जाता है। कुलदीप तोष के अलावा भी एकाधिक लड़कियों से संबंध रखता है। जिसमें सुनिता, अनीता और मिसेज पिंटो का विशेष स्थान है। मगर कुलदीप इन लड़कियों में से तोष के प्रति ज्यादा ध्यान और साहनुभूत है। जैसे "पर ये सभी उसकी जिन्दगी की लोकल गाड़ियाँ थी स्टापिंग एट ओल स्टेशंस और तोष थी फास्ट ट्रैन ....नोट स्टोपिंग एक ओल स्टेशंस।"**52** यहाँ दूसरी ओर तोष भी कुलदीप के अलावा अन्य पुरुष से संबंध रखती है। एक बार कुलदीप तोष को अन्य पुरुष के साथ मुसाफरी करते देख लेता है। वह तोष को उस पुरुष के बारे में पूछता है। जवाब में तोष अन्य पुरुष को अपना कजिन बताती है। कुछ दीन बाद तोष भी कुलदीप से पूछती है की उस दीन तुम्हारे साथ वह लड़की कौन थी ? कुलदीप कहता है की वह मेरी

कजिन है, जो दिल्ली से यहाँ आई है। इस तरह दोनों एक-दूसरे से झूठ बोलते है और दुराव-छिपाव वाला प्रेम चलता रहता है।

वैसे तो दोनों के बीच छोटे- मोटे मनभेद होता रहता है। जिससे दोनों एक-दूसरे से उदासीन हो जाते है। रोज़ नौ बजे सुबह कुलदीप दफ्तर चला जाता था। किन्तु वह सारा दिन विस्तर पर पड़ा-पड़ा सोचता है, "उसके चारों तरफ रोज़ की तरह सब कुछ दौड़ रहा था। आज तक वह खुद भी दौड़ता था, आज इस दौड़ को वह दार्शनिक की तरह देख रहा था।"**53** दोनों इस प्रकार की उलझन में रहते है। एक दिन तोष कुलदीप को फोन करती है। तब फोन पर वह अजीब सा सवाल करता है "तोष ....अच्छा हम लोगों का आपस में क्या संबंध है ....मतलब यह कि हम दोनों क्या है ?"**54** कुलदीप जैसा सोचता है वैसा ही तोष उतर देती है कि - "क्या अभी हम लोगों को यह जानना बाकी है कि हमारा आपस में क्या संबंध है ....हम आपस में क्या है ?"**55**

कुलदीप और तोष जितना एक दूसरे को चाहते है उतना ही एक दूसरे पर शक भी करते है। इसी शक के कारण कुछ दिन उन दोनों में दूरियाँ भी पड़ती है। एक बार कुलदीप तोष को कार में किसी अन्य व्यकित के साथ देख लेता है तब स्थिति बिगड़ने लगती है तथा कुलदीप तोष से कह उठता है, "तोष मेरी बात समझने की कोशिश करो। मैं पूछ रहा हूँ कि क्या हमारे बीच अभी भी बहुत से पर्दे नहीं है ? बहुत सी दीवारें नहीं है ? बहुत सी अनकही अनबताई बातें नहीं है। हम दोनों एक-दूसरे के सामने अपना समूचापन लेकर नंगें नहीं हो जाते?"**56** इस प्रकार जब तक वे अंधेरे में हैं, तब तक चलता रहता है परन्तु जैसे ही वे उजाले में आते हैं, उनके संबंधों का मधुर्य खत्म होने लगता है। इसीलिए तोष से कुलदीप कहता है कि - "नहीं तोष ....आँखें तो बन्द ही रहने दो। आँखें खोलने से रोशनी दिखाई देती है और यह रोशनी न मुझे अच्छी

लगती है न तुम्हें। ....तोष हम उजाले के उल्लू है ....उजाले के उल्लू। हम कहते उजाले की बात है, पर रहना चाहते हैं अंधेरे में। तोष हमारी जिन्स जली हुई है ....झुलसी हुई है। वह हम किसी को दिखा नहीं सकते इसलिए हम सब आँखें बंद किए रहते हैं ....न तुम्हारा झुलसा हुआ चेहरा मुझे दिखाई दे न मेरा तुम्हें।"**57** इस प्रकार कुलदीप एवं तोष के विवाह पूर्व प्रेम संबंधों में तभी तक मधुरता बनी रहती है जब तक वे एक-दूसरे के संबंधों के बारे अनजान बने रहते हैं। जब जानने की कोशिश करते हैं तो कटुता पैदा होने लगती है।

इस प्रकार कहानी में कुलदीप और तोष के बनते-बिगडते प्रेम संबंधों का चित्रण किया गया है। लेकिन मनुष्य उजाले के उल्लू की तरह अपनी आँखें बंद कर सच्चाई से मुख मोडकर रिश्तों का मात्र महसूस करता है। रिश्तों को जीता नहीं बल्कि ढोने के लिए विवश है।

(5) 'पत्नियां'

इस कहानी में पत्नियाँ को नीचा दिखाने की कोशिश की गई है। जिसमें पुरुषों अपने आपको युवान और अपनी पत्नियों को बूढ़ी समझने लगते है। पत्नियाँ घर संभालती है, इसी कारण वह अपने आपको अच्छी तरह ध्यान नहीं दे पाती है।

यह कहानी एक कॉलेज के लेक्चरर स्टाफ के व्यक्तियाँ की कहानी है। स्टाफ में महिलाएँ भी है और पुरुष भी। हल्की-फुल्की मज़ाक चलती रहती है। परन्तु संतोष एक ऐसा पात्र है जो अपनी बीवी की ढलती उम्र को लेकर चिंतित है। इसका कारण यही अंका जा सकता है कि यह वहाँ नवयुवकों के बीच रहते हुए अपने आपको चिरयुवा समझता है। और वह अपने साथियों के बीच अपनी पत्नी के साथ उपस्थित होकर उनके उपहास का पात्र नहीं बनना चाहता है।

संतोष अपनी पत्नी की कही भी अपने साथ कभी भी नहीं लेकर जाता था। एक दिन संतोष के स्टाफ के डॉ.कपूर के घर पर उनके लड़के के चौथे जन्मदिवस का छोटा सा समारोह था। विमला का मिसेज कपूर से बहनाया सा हो गया था। पार्टी से दो धंण्टे पहले आकर उसने काम में हाथ बंटाया। संतोष कपूर साहब के नियन्त्रण पर विमला को ले जाना टाल नहीं सकता था परन्तु दो धंण्टे पहले पहुंचकर उसका अन्य सभी लोगों से परिचय कराना टाल गया। विमला कपूर परिवार में बहुत हिली-मिली थी। संतोष पार्टी शुरू होने पर साथी प्रोफेसरो से गपशप कर रहा था। इतने में वह किसी काम से उसके पास आई। संतोष ने हरबंस लाल, मेहता और शर्मा से परिचय कराया-मेरी पत्नी .... । दूसरे दिन हरबंस लाल कॉलेज में उससे पूछ रहा था "तुम्हारी बीवी उम्र में तुमसे बड़ी है क्या ?"**58**

संतोष के कानों में यह प्रश्न न जाने कितनी बार बिन पूछे ही ध्वनित हो चुका था। उसने बहुत सहज होकर उत्तर दिया, हां दो साल ! फिर प्रश्न की तपती हुई धूप के सामने उसने एक कहानी की छतरी तान ली- "ऐसा हुआ था कि विमला की शादी मेरे एक चचेरे बड़े भाई से हुई थी। रात को शादी हुई और सुबह ही वह एक ट्रक के नीचे आ गया। विमला सधवा होने से पहले ही विधवा हो गई ....उसके बाद ....मैंने उससे शादी कर ली।"**59** यहाँ पर संतोष अपनी पत्नी के बारे में झूठ बोलता है।

संतोष को अपनी पत्नी युवा होनी चाहिए थी। वह ऐसा ही सोचता है संतोष का सोचना कि उसकी पत्नी का रंग, "कुछ इस तरह का बदरंग हो गया है कि उस तरफ झाँकने की उन्हें जरूरत ही महसूस नहीं होती। वह कोना जैसे किसी बड़े घर का वह कमरा है जिसकी सफेदी उत्तर गई है और अब वह पुरानी चीजों को स्टोर करने के काम ही आता है।"**60**

संतोष की पत्नी घरेलू काम व बच्चों की देख-रेख में अपने लिए समय निकाल ही नही पाती, जबकि पति-पत्नी की ढलती उम्र को देखकर न तो उन्हें किसी पार्टी में ले जाता है, न ही वह दोस्तों से पत्नी के बारे में खुलकर बात कर सकता है। उसमें पत्नी को लेकर एक कॉम्प्लेक्स पैदा हो गया है।

इस तरह कहानी में संतोष अपनी पत्नी की उम्र, रंग, देखभाव को लेकर परेशान रहता है। यहाँ पर भी स्रीयाँ को ही निम्न होने का होता है।

(6) 'लोग'

यह कहानी पति-पत्नी के संबंधों को दर्शाती है। मदन और नीला पति-पत्नी है। घर गृहस्थी की तनावों से दोनों एक दूसरे से अलग हो जाते है। आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी नीला हमेशा पति की भावनाओं को ठेस पहुँचाने की ताक में रहती है। मदन उसके साथ समझौता करना चाहता है पर वह मौका नहीं देती। उसके कठोर बर्ताव से घर में हमेशा एक दहशत का वातावरण छाया रहता है। पति से दूर रहकर भी नीला खुश रहती है। पुत्र की अच्छी ख़ासी देखभाल करती है।

'लोग' कहानी में पत्नी के 'स्व' को लेकर उनके दाम्पत्य संबंधों में दरार पैदा हो जाती है। पत्नी नौकरी करती है, अत:पति को इतना महत्व नही देती। पति कहता है, "नीला से मेरी बहुत अच्छी तरह निभ सकती है........यदि वह बस थोडा सा मेरी भावनाओं की क़दर कर लिया करे। पर पता नही क्या बात है कि मुझे हर्ट करने में उसे बड़ा स्वाद आता है। बात-बात में वह मुझे खिझाती है, टीज करती है। अपनी बात वह ज़बरदस्ती मनवा लेती है। लेकिन मुझे इतना भी भरोसा नहीं रहता कि मेरे मांगने पर वह एक गिलास पानी भी मुझे मिला देगी।"**61**

नीला और मदन में एक बार बहुत झगड़ा हुआ था। दोनों तलाक के लिए राज़ी हो गए थे। पर बिल्लू को लेकर समझौता नहीं हो पा रहा था। मदन कहता था - "बिल्लू को मैं अपने पास रखूंगा।"**62** नीला कहती थी - "मर्दों का क्या है ? ...... सहारे की जरुरत तो औरतों को पड़ती है। बिल्लू को मैं किसी हालत में नहीं दूंगी।"**63**

मदन के बगैर नीला भी अपनी जिन्दगी मज़े से गुजार ही रही है। नीला एक बार कहती थी कि - "आज नौकरी छोड़ दूं तो दफ्तर से बीस हजार मिल जाएंगे। जो फ्लैट बुक किया था उसकी पूरी किस्तें भी भर दी है। उस पर दसेक हजार खर्च हुए है। आज बेचूं तो पच्चीस हजार कही गए नहीं। इतने से अपनी जिन्दगी तो आराम से गुजार सकती हूँ। बस एक बिल्लू की ही तो भार है मुझ पर। वह मैं उठा लूंगी।"**64**

इस प्रकार पति-पत्नी के संबंधों में आपसी भावनाओं की अवहेलना तथा 'स्व' को लेकर बिखराव आ गया है तथा पत्नी यह दर्शाती है कि वह असहाय नहीं रह गई है। पति के बिना भी वह भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है।

इस कहानी का उद्देश्य यह दर्शाता है कि आज सुशिक्षित स्वावलंबी नारी पति से अलग होने पर भी अपने बलबूते पर सम्मान के साथ समाज में जीने की क्षमता रखती है। वह पुरुष की भाँति स्वतंत्र जीवन याचन की हक़दार है। घर सिर्फ चार दीवारों से, शादी से, बच्चों से या फिर धन-दौलत से नहीं बनता बल्कि पति - पत्नी के मधुर संबंध से बनता है।

(7) 'घिरे हुए क्षण'

यह कहानी में महानगर की भागदौड़ अनेक विसंगतियों को जन्म देती है। इससे उनके व्यक्ति की मानसिकता प्रभावित होती है। जिसके

प्रभाव से व्यक्ति के भावात्मक संबंध टूटने लगे है। दांपत्य जीवन में भावात्मक एकता बनाये रखने के लिए प्रेम और विश्वास महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पति-पत्नी के मन में तीसरे व्यक्ति की आशंका मात्र से संबंधों में दुर्बलता आती है।

इस कहानी में दिलीप व मोहिनी के विवाह पूर्व प्रेम संबंध विवाहित जीवन में आड़े जाते है। क्योंकि वे दोनों विवाह से पूर्व एक-दूसरे से मिलने के लिए बहाने बनाते थे और बहाने बनाने में दोनों माहिर थे। मोहिनी कहती है - "दिलीप भाई, आज ज्यादा देर नही रुकूंगी पता है, कल दस बजे घर पर पहुँची थी। डैडी मम्मी पर खूब झल्ला रहे थे और मम्मी बेचारी की हालत खराब हो रही थी। मैंने दोनों का मूड देखा तो लगा बच्चू आज खैर नहीं। पर तुम जानते हो मेरे पास बहानों के बावन पत्ते हैं और जब देखती हूँ, कि इनमें से कोई कामयाब नहीं होगा कि बस तुरूप चाल चलती हूँ .... सब चित हो जाते है।"**65**

दिलीप को संशयग्रस्त बताया है। जो उसकी कमज़ोरी है। दिलीप की पत्नी मोहिनी खूबसूरत है। मोहिनी परिवार को आर्थिक मदद हेतु नौकरी करती है। मोहिनी नौकरी के स्थल पर आकर्षक कपड़ों में सज-संवरकर जाती है। दिलीप अपनी पत्नी की आकर्षक अदा और पत्नी पर दूसरे पुरुषों की खराब दृष्टि के संशय मात्र से अवैधिक संबंध होता है। एक बार मोहिनी को दिलीप की जेब से सिनेमा के रात्रि शो के दो टिकट मिलती है। जो दिलीप का किसी अन्य के साथ पिक्चर में गये होने का सबूत है। फिर भी वह पूरे सत्य को जानते हुए भी मौन रहती है।

पति-पत्नी दोनों अपने-अपने ढंग से जिन्दगी जीना चाहते है। दिलीप जब अपनी पत्नी को कही चलने के लिए कहता है तो वह अपनी असमर्थता प्रकट करती है तो दिलीप को लग रहा है कि - "मोहिनी कही

खो गई है। चोपड़ा, मितल, शर्मा, पता नहीं किन-किन के स्पर्श को बोध उसे एक बड़ा रोमांटिक खयाल आता है, वह मोहिनी को कही भगा ले जाए। जैसे वह उसकी पत्नी नहीं है वह एक पराई औरत है - कितने ही लोगों से घिरी औरत।"66 पति-पत्नी के बीच ऐसी स्थिति उत्पन्न होने से संबंधों में बिखराव आया है।

नौकरी-पेशा नारी की समस्याओं को उजागर करने के लिए कहानी में मोहिनी का पात्र लिया है। मोहिनी सुबह दस से शाम छ:बजे तक पूरा दिन नौकरी स्थल पर रहती है। उसे कुछ समय का भी आराम नहीं मिलता है।

इस तरह कहानी में नौकरी-पेशा व अर्थ के कारण दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है। जो अपनी पत्नी के पुरुष सहमतियों को लेकर संशयग्रस्त है। अत: कहा जा सकता है कि विवाहोत्तर जीवन में दिलीप को यह शंका लगी रहती है, कि वह उसके सामने तुरूप चाल चलती है।

(8) 'कील'

यह एक पिता और पुत्री की कहानी है। जिसमें पिता अपनी पुत्री को साधारण नहीं मानते है। वह उसकी शादी तय नहीं कर पाते है। बाप-बेटी के संबंधों को स्वार्थ और थोथी संवेदनाओं के घेरे में दिखाते हुए अनेक इनके अंदर से झांकते नये मूल्यों सच्चाइयों के सामने रखने का प्रयास किया गया है।

पिता चोपड़ा साहब अपनी बेटी मोना की सुरक्षा के लिए कुछ अत्यंत सजग दिखाई देते है। वह उसका हाथ किसी योग्य लड़के के साथ हाथ में देना चाहते है। अत:उन्हे मोना के लिए कोई लड़का पसंद ही नही आता। और दूसरा कारण यह भी नजर आता है कि उसमें बेटी के सानिध्य की चाह है और इसलिए उसकी इतनी प्रशंसा करते है की वह

अपने आपको महान समझने लगती है तथा कोई लड़का उसे अपने योग्य नजर ही नही आता। वह स्वयं को पिता की दृष्टि से देखने की अभ्यस्त हो गई है।

मोना के पिता ने मोना को असाधारण बना दिया है। "डैडी से वह लगातार सुनती आ रही है की वह कोई मामूली लड़की नहीं है। यह बात उसके अंदर इतनी गहराई तक बैठ गई कि उसे हर लड़की बहुत मामूली नजर आती है और लड़का अपने काबिल नजर नहीं आता।"**67** वह बाप की प्रशंसाओं और प्यार को ढोती-ढोती एक मानसिक द्वन्द्व से घिरी रहती है तथा उसकी शादी की उम्र ढलती रहती है।

एक दिन मोना की मम्मी का सुबह-सुबह पत्र मिलता है उसमें लिखती है कि - "मोना, अब और ज्यादा रुकना ठीक नहीं। हर बात की एक उम्र होती है। फिर लड़की तो एक ऐसा फूल है की अपनी डाल पर लगे-लगे मुरझा जाता है और अगर उसे तोड़कर किसी के कोट पर लगा दिया जाए तो उसकी ताज़गी खत्म होने में ही नही आती। अब तुम्हें फैसला कर ही लेना चाहिए। मुझे तुम्हारे डैडी की बात अब तो बिलकुल समझ में नही आती। यह ठीक है कि तुम लाखों में एक हो। परन्तु अब ऐसा लड़का जो तुम्हारे डैडी को भी पसंद हो और तुम्हें भी पसंद हो, कहां से ढूंढा जाएगा और आखिर यह ढूंढाई कब तक चलती रहेगी।"**68**

मोना अपनी माँ का पत्र मिलने के बाद उसे महसूस होता है की उसके जीवन में कुछ भी असाधारण नहीं है तो वह इस ग्रंथि से मुक्त हो जाती है। जब वह अपने आपको पिता की दृष्टि की बजाय एक स्त्री की दृष्टि से देखती है तो उसे अपने चेहरे पर एक कील को खुरचकर फेंक देती है। "एकाएक उसे अपने दाहिने गाल के ऊपर एक कील सी दिखाई देती है। वह बहुत नज़दीक होकर उस कील पर उंगली रगड़-रगड़कर

देखती है। उसे आश्चर्य होता है। मुंह पर यह कील कब निकल आयी ? वह उसे खुरचने लगती है। .... मोना ने कील खुरचकर फेंक दी है और उस स्थान को मुंह बिचकाकर, गर्दन टेढी करके देख रही है।"**69** इस तरह मोना अपने पिता के अतिरिक्त लगाव को झंटक कर फेंक देती है। और पिता द्‌वारा पैदा किए व्यवधान से मुक्ति पा लेती है।

कहानी में मोना पिता द्‌वारा खड़े किये भ्रमजाल को तोड़ती है। स्वार्थी पिता के प्रति विद्रोह करती है। यहाँ एक लड़की अपनी मरजी से शादी नही कर सकती है, जिसके कारण उसकी उम्र ढल जाती है।

(9) 'गंघ'

'गंघ' कहानी में यौन अनुभवों के संश्लिष्ट रुप को दिखाया गया है। यहाँ पर यौन जीवन की विषम न विस्फोटक स्थिति के कारण उपजी हताशा व निराशा के बीच व्यक्ति को सहज होते दिखाया गया है। मूल्यों में आये बदलाव से नारी को अधिक कलंकित होना पडा है। एक और नारी स्वतंत्रता का गेरलाभ भी उठाती है। तो दूसरी ओर पुरुष की ओर से नारी को अपमान, उपेक्षा एवं शोषण का शिकार भी बनना पड़ता है। यह स्थिति में नारी को व्यथा एवं उदासीनता से ज्यादा कुछ प्राप्त नहीं होता है। नारी अपने नि:सहायता भरी जिन्दगी के कारण पुरुष से शोषित होती रहती है।

यह कहानी में शान्ता एकाधिक पुरुष से शोषित नारी है। कहानी का कथ्य शान्ता एवं नरेश के देहरादून प्रवास पर आधारित है। शान्ता सौन्दर्यविहीन है। नरेश का शान्ता से परिचय उसकी पत्नी राज़ी के माध्यम से हुआ था। शान्ता और राज़ी एक ही स्कूल में शिक्षिका की नौकरी साथ में करती है। एक दिन नरेश शान्ता के पास देहरादून चलने का प्रस्ताव रखता है। शान्ता पहेले मना कर देती है। दूसरे दिन शान्ता

अपने विचार को बदलते हुए देहरादून जाने के लिए तैयार हो जाती है। जिससे नरेश को संकोच और खुशी दोनों का अनुभव होता है।

नरेश और शान्ता दोनों मसूरी एक्सप्रेस से देहरादून जाने के लिए निकलते है। सफर के दौरान ही नरेश शान्ता से अवैधिक मांग करता है कि - "अब मुझे पति बनने का मौका भी दो।"**70** नरेश की यह बात सुनते ही अवाक बन जाती है शान्ता। फिर थोड़ा संभलकर जवाब देते हुए कहती है - "पति बनने का मौका तो तुम चाहते हो। पत्नी वाला दर्जा तुम मुझे नही दे सकते। खेर तुम्हारी मजबूरी मैं समझती हूँ। पर अनील की क्या मजबूरी थी? श्याम और सुबोध की क्या मजबूरियाँ थी ? सब मेरी जिन्दगी में आएँ सब पति बनने का मौका ढूँढते रहे पर जब मुझे पत्नी का दर्जा देने की बात आयी तो कान दबाकर खिसक गये।"**71** इन शब्दों को सुनकर नरेश अपमानित होता है। उसके बाद दोनों के बीच बातचीत नहीं हो पाती है। नरेश को शान्ता के साथ मसूरी जाना व्यर्थ लगता है। दोनों चुपचाप पहाड़ियों में घूमते रहते है।

थोड़ी देर के बाद शान्ता अपनी चुप्पी तोड़कर बोलती है "इतने चुप क्यों हो ?........ चुप रहना था, तो मुझे अपने साथ मसूरी क्यों लाएँ?....... ऐसी हर खामोशी से आदमी घबराता है जिसके अंदर कोलाहल हो।"**72** बाद में दोनों अपनी - अपनी कमजोरियों पर चर्चा करते हैं। दोनों खामोशी के साथ पहाडो में घूमते रहे। वैसे यह सर्व सामान्य है कि एकान्त, शरीर स्पर्श और शरीर दर्शन स्त्री-पुरुष की नैतिकता के दुश्मन होते है। ठीक ऐसी परिस्थिति में शान्ता और नरेश अपने आपको नियंत्रित नहीं कर पाते है। नरेश इस तरह की स्थिति में बेचैन हो जाता है और अपने आपको तनावमुक्त करने की कोशिश करता है। "नरेश कुछ क्षण उसकी आँखों में देखता रहा। फिर उसने उसका मुँह अपनी दोनों हथेलियों में थाम लिया और उसके जलते हुए होठों को पीने लगा।"**73**

उस दिन देहरादून से घूमकर दोनों दिल्ली लौट आते है। जब वह घर आते है तब नरेश की पत्नी अपने काका के यहाँ जाती है। नरेश और शान्ता दोनों घर में अकेले है और फिर से दोनों की नजदीकियाँ बढ़ जाती है। शान्ता एक दिन रुककर दिल्ली से कलकत्ता चली जाती है। कोलकता पहुँचकर शान्ता ने महीने-भर के अंदर ही किसी से इतनी झटपट शादी कर ली जितनी झटपट कलकते की भीड़ किसी बस या ट्राम को आग लगा देती है। शादी की खबर भी किसी को भी नहीं देती है।

प्रस्तुत कहानी में स्री-पुरुष के संबंधों में व्याप्त यांत्रिकता को उभारा है। जिसमें पुरुष की स्वार्थपरिता एवं नारी की विवशता-लाचारी को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। ऐसे संबंधों में नारी का ही शोषण होता है।

(10) 'घिराव'

नारी इस समय में यानी आधुनिक युग में स्वतंत्र रुप से जीना और रहना पसंद करती है। आज की नारी अपने पति के अनुशासन में रहना पसंद नहीं करती। नारी को विवाह करके बच्चे पैदा करने और पालन करने तक सीमित रह जाती है। नारी अपने पति से रिश्ता तोड़कर भी अलग रहती है, फिर भी उसके पति के आस-पास घिरकर ही रहती है।

'घिराव' कहानी तलाक़शुदा नारी की मनस्थिति को उभारती है। सुम्मी को पति की ओर से त्यकता बताई गई है। सुम्मी दिल्ली की कॉलेज में प्राध्यापिका है। सुम्मी के पति का नाम अमर है, मगर वह उससे अलग रहती है। यह दोनों पति- पत्नी की एक प्यारी सी लड़की भी है। जिसे सुम्मी तलाक के बाद अपने साथ न रखते हुए होस्टेल में पढ़ा रही है। मगर पढ़ाई का पूरा खर्चा वह खुद उठा रही है। तलाक के बाद भी दोनों एक ही शहर दिल्ली में रहते है फिर भी अजनबी बनकर रह रहे है।

सुम्मी तलाक के बाद अपने नए पुरुष मित्र ओमी के साथ रहते हुए अपने पति को नहीं भुला पाती, हमेशा अपने पति से घिरा हुआ पाती है। उसे यह भी पता है की वह अचानक मिल जाने पर उससे अच्छी तरह से पेश आता है। फिर भी उसके सामने पड जाने की आशंका उसे हमेशा घेरे रहती है। सुम्मी का पुरुष मित्र ओमी पूछता है कि, "यह बताओ कि अब अमर का अस्तित्व तुम्हारे लिए कितना है ? मेरे लिए उसका अस्तित्व? वह सोचने सी लगी, तर्क से बुद्धि से कहूँ तो मेरे लिए उसका अस्तित्व बस इतना है कि वह भी उन सैंकड़ों आदमियों में से एक है जो दिल्ली में रहते है और जिन्हें में जानती हूँ। .... पर यह बात सिर्फ कहने और सोचने की है। मैं यह भी जानती हूँ की अभी भी मेरे लिए उसका अस्तित्व उन सैंकड़ों आदमियों से अधिक है जिन्हें मैं जानती हूँ। ऐसा न होता तो सड़क पर चलते-चलते पीछे से उसका आभास पाकर मैं रुक क्यों जाती हूँ।"**74** इस तरह सुम्मी अपने पति अमर से कोई भी संबंध नही रखना चाहती है। वह अपना गुजारा खुद कर लेती है।

सुम्मी अपने पति से अलग रहकर भी अन्य पुरुष का सहवास ज़रुर चाहती है। अन्य पुरुष के सहवास से ओमी सुम्मी के घर पर आया-जाया करता है। इतना ही नही दोनों साथ में घूमने-फिरने भी जाते है। सुम्मी संबंध तो रखती हैं, मगर मन ही मन डरती है। अपने इस व्यवहार के बारे में पूर्व पति को पता चल जाने की आशंका मात्र से भयभीत रहती है। सुम्मी अपने ही अतीत को भूल नहीं पाती है, "मैं जानती हूँ वह बहुत बुजदिल किस्म का आदमी है पर पता नहीं क्या बात है। अपने आस-पास उसकी उपस्थिति का आभास मुझे बेचैन कर देता है। क्या मेरी बेचैनी डर है ? मैं अमर से डरती हूँ ?"**75** एक बार सुम्मी और ओमी रात को घूमते हैं तब पुलिस गिरफ़्तार करती है तब वह भयभीत हो जाती है। अपनी गिरफ्तारी से अनागत समस्याओं के बारे में सोचती हैं "ओमी के

दिमाग में कैघने लगा ....थाना ...... वेरीफिकेशन ....सुम्मी .... वाइफ ओफ अमर साहनी .... पता .... पेशा .... बयान .... उसका नाम ..... पता .... शायद अखबार में खबर।"**76** ओमी इस से छुटकारा प्राप्त करने पुलिस को रिश्वत देते है।

सुम्मी अपने आपको हमेशा पूर्व पति के व्यक्तित्व से घिरा पाती है। यह घिराव उसके विवाहेत्तर संबंधों में आड़े आता है। सुम्मी कहती है, "पर यह घिराव अमर की तरफ से नहीं है। यह मेरे मन का ही है। .... फिर भी उसकी उपस्थिति के अहसास से मेरा रंग उड़ने लगता है।"**77** इस प्रकार सुम्मी अमर को छोड़कर भी उससे मुक्त नहीं हो सकी और ओमी से जुडकर भी स्वयं को अजनबी महसूस करती है।

अत: पति की ओर से त्यकता नारी की मनःस्थिति को उभारा गया है। सुम्मी अपने पुरुष मित्र ओमी के सानिध्य में भी रहकर भी पति के बारे में सोचती रहती है। यह यादें उसे घिरे रहती है। यहाँ पर पत्नी बहुत दुःखी रहती है.।

(11) 'फोकस'

यह कहानी फिल्मी जिन्दगी को दर्शाती है। कहानी में माता-पिता एवं भाई के संबंधों को स्वार्थ और थोथी संवेदनाओं के दायरे में ही चित्रित करती है। आज पूजीवादी व्यवस्था ने हर संबंध को इस्तेमाल की चीज बना दिया है। इस कहानी में संबंधों की व्यवसायिकता पर प्रकाश डालता है। घर के सभी सदस्यों के लिए घर की बेटी कमाने का साधन ही बन जाती है।

यह कहानी का तथ्य इस तरह से है की एक सामान्य परिवार होता है। घर में भाई, बहन, माता-पिता सब साथ में रहते है। किराये के घर में रहते है। आर्थिक परिस्थिति अच्छी नही होती है। तब उस घर की छोटी

बेटी रानी को यानी चंदन की बहन को फिल्म एकस्ट्रेस बन जाती है। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी तरह संपन्न हो जाती है। रानी के माता-पिता, भाई-बहन सबकी आँखें रानी के सफलता एवं आर्थिक लाभ पर टिकी रहती है।

एक दिन सुबह-सुबह ही रानी के माता-पिता फिल्म का शो देखने जाते है। आने के बाद रानी के पिता कहते है कि - "मैंने इनसे कहित कहा कि आज श्याम आने वाला है, पर इतवार को मोंनिग शो देखें बिना इन्हें खाना हजम नही होता।"**78** तभी उसी समय रानी ने पूछा "पापा, 'किस मी अगेन' देखी न आपने ? कैसी लगी आपको पिक्चर ?"**79** तब पापा जवाब मुंह बिचकाते हुए कहा - "सो .... सो .... बहोत ही अच्छी।"**80**

थोड़ी देर के बाद सभी खाना खाकर सभी लोग फिर से वही बैठ जाते है। इसने में कालबेल बजी ओर रानी उधर चली गई। जब वह अंदर आती है तो उसके साथ एक ऊंट जैसी गर्दन वाला लम्बा आदमी था। रानी ने उसका परिचय कराया "यह है मशहूर फिल्म जर्नलिस्ट मि. फूल।"**81**

रानी और फूल आपस में अपनी बातें करते है तभी फूल कहता है की आपकी पब्लिसिटी के लिए में दो-एक स्टंट छोड़ना चाहता हूँ। हर स्टार अपनी पब्लिसिटी के लिए ऐसे स्टंट करता है। यह सब फिल्म जगत में बहोत ज़रुरी बन गया है।

यह बात सुनकर रानी पूछती है कौन सा स्टंट छोड़ना चाहते है आप ? तब फूल कहता है की - "मैं यह खबर उड़ाना चाहता हूँ की 'टूटी दीवार' के हीरो राजदीप के साथ आजकल आपका गहरा रोमांस चल रहा है। और आप जल्दी ही उससे शादी करने वाली है।"**82** फूल की यह बात

सुनकर कमरे में बिजली की तरह चमक आ जाती है। पापा का अखबार पढ़ना बन्द हो गया। मम्मी अपनी ऊंघ से जाग उठी। शीला का मोजा बुनना रुक गया। और चन्दन ने अपनी कहानी पत्रिका उलट दी। सब के सब रानी की ओर देख रहे थे और रानी के चेहरे पर लज्जामिक्षित मुस्कराहट छाई हुई थी। रानी बताती है कि मेरा तो राजदीप के साथ कोई रोमांस नहीं है। फूल कहता है अच्छी हीरोइन बनने के लिए पब्लिसिटी बहोत ज़रुरी है। रानी अपने पापा की ओर देखती है। वे बड़े ध्यान से फूल साहब की बातें सुन रहे थे फिर बोलते है कि - "फूल साहब आप बिलकुल ठीक कहते है। आई डिग्री विद पू। पब्लिसिटी की बड़ी वेल्यू होती है। और फिल्म लाइन में तो इसके बगैर बिलकुल गुज़र नही। जब मैं लन्दन में था तो वहां के स्टारों के बारे में भी ऐसे स्टंट रोज़ सुनता था। आप दीजिए यह खबर।"**83**

इस तरह कहानी में रानी के माँ-बाप, भाई-बहन उसकी फिल्मी मार्केट जानने के लिए उसके कल्पित रोमांस की फूहड़ खबर फैलाने को तैयार हो जाते है। यह सभी यह झूठी खबर फैलाने में बिलकुल झिझकते नही है। परिवार के सभी सदस्यों को धन और यश के लिए रानी का शोषण कर रहे है सभी और रानी यह बात से बिलकुल अंजान है।

रानी को परिवार का आजिविका का एक साधन के रुप में देखा गया है। बेटी आज बाप या परिवार की नजर में पराया धन नही रह गई है।

(12) 'सीधी रेखाओं का वृत'

महीप सिंह की कहानी आधुनिक नारी की स्वतंत्र अस्तित्व पर निर्भर करती है। स्वातंत्रत नारी पुरुष के समक्ष सर्वस्व, समर्पित कर देती है। मगर पुरुष नारी को अपने अधिकार की चीज मानकर उपभोग करता

है। कभी-कभी नारी अपने पति के अनुशासन में न रहते हुए विरोध भी कर सकती है।

यह कहानी का कथ्य पाँच साल की अवधि में फैला हुआ है। कहानी के मुख्य पात्र सनी स्वतंत्र अस्तित्व रखनेवाली नारी का नेतृत्व करती है। सवी एक औरत है और मिनी एक पुरुष है जो एक ही कॉलेज में साथ में नौकरी करते है।

दोनों कॉलेज में साथ में नौकरी करने के कारण दोनों में मित्रता हो जाती है। सनी का अभी तक विवाह नहीं हुआ है जब की मिनी एक विवाहित पुरुष है। सनी और मिनी के बीच प्रेम पत्रों का आदान-प्रदान भी होता रहता है। दोनों कही घंटे तक कभी-कभी हिमालय रेस्तरां पर बेठे रहते है। इस तरह दोनों की मित्रता से में प्रेम बदल जाती है।

इन दोनों के बीच मिलना-जुलना होता है। एक दिन सवी ने मिनी को हिमालय रेस्तरां पर मिलने बुलाती है। सवी रेस्तरां पर मिनी का कही घंटे से इंतजार करती है। मिनी को सवी से मिलने मिलने का बिलकुल मन नही था, फिर भी वह वहाँ जाता है। मिनी सवी को पूछता है कि यहाँ पर मुझे क्यू बुलाया है, तो सवी कहती है कि - “मिनी तुम मुझसे शादी कर लो।”**84** यह बात सुनकर मिनी को एक झटका लगता है। वह अपने आप को एक अपराधी हो ऐसा मेहसूस करता है और कहता है कि - “पर सवी सोचों यह कैसे हो सकता है। मैं विवाहित हूँ। और एक पत्नी के रहते दूसरी पत्नी रखना ग़ैरक़ानूनी माना जाता है।”**85** यह सब सुनकर भी सवी मिनी की दूसरी पत्नी बनने के लिए तैयार है पर मिनी को यह स्वीकार नहीं है। यह बात सुनकर सवी जड़सी हो जाती है। दोनों मौन रहकर थोड़ी देर बैठ रहते है। उसके बाद मिनी सवी को बिना कुछ कहे केबीन में अकेली बैठी छोड़कर चला जाता है।

यह सब होने के बाद भी सवी हिम्मत नही हारती है। वह कामुक पुरुष द्वारा छली जाती है और वह अपनी इच्छा पूरी नही कर पाती। परन्तु वह इस तरह की परिस्थिति से ज़रा भी विचलित नही होती है, बल्कि एक सक्रिय जीवन जीने के लिए दूसरे व्यक्ति से शादी कर लेती है। कुछ महीनों के बाद सवी की शादी मि.बिन्द्व के साथ हो जाती है। बाद में सवी और मिनी को एक दूसरे से कोई शिकायत नही थी। सवी चाहती थी कि - "मिनी तुम मेरे दोस्त बने रहना, मेरे नही 'हमारे' दोस्त बने रहना।"**86** इसी तरह दो-तीन साल निकल जाते है और सवी को एक लड़का भी हो जाता है। दोनों के बीच का रिश्ता व्यवहार का भी आदरणीय हो जाता है।

सुनिता लम्बा नामक लड़की की एटेन्डेस लगाने की मिनी सवी को सिफारिश करता है। मगर सवी ऐसा न करते हुए शॉर्ट एटेन्डेस स्टूडेन्टस की सूची में सुनिता का नाम शामिल कर देती है। मिनी का सवी को सुनिता के शॉर्ट एटेन्डेस के बारे में पूछने पर वह बताती है कि - "कौन सी लड़की .... ? वो सुनिता लम्बा? बड़ी गैरजिम्मेदार लड़की है। कैंटीन में बैठी लडकों से गप लगाती रहती है और क्लास में आती नही। ऐसी लडकियाँ को सबक मिलना चाहिए। उस लड़की में तुम्हारी कोई खास दिलचस्पी है ?"**87** यह बात सवी की सुनकर मिनी को बड़ा धक्का लगता है। मिनी सवी से कहता है "लड़कियों में मेरी खास दिलचस्पी हो भी तो क्या होता है? तुम में भी मेरी दिलचस्पी थी।"**88** यह सब बात सुनकर सवी क्रोधित हो जाती है। वह मिनी के सामने अपना दबा हुआ आक्रोश व्यक्त करते हुए वह कहती है "मैं ही जानती हूँ कि तुम्हारी कितनी दिलचस्पी थी मुझमें। तुमने मुझे कुचला था, दुत्कारा था, अपमानित किया था। तुम समझते हो सब लोग तुम्हारे जरखरीद गुलाम है। तुम

किसी के साथ कैसा भी व्यवहार कर सकते हो। तुम समझते हो मैं अभी भी तुम्हारे पीछे उसी तरह दुम हिलाती हुई घूम रही हूँ।"**89**

इस तरह कहानी में सवी को अपने विवाहोत्तर जीवन में पूर्व प्रेमी की दखलंदाज़ी पसंद नही है। एक समय की इतनी करुण, दुबली-पतली सवी ने अब इतना आत्मविश्वास अर्जित कर लिया है कि वह अपने पूर्व प्रेमी की छोटी सी बात को भी सुनना नही चाहती, उसकी उपेक्षा करने लगती है। स्वाभिमान नारी अपने आत्म-सम्मान को बनाये रखने के लिए कुछ भी कर सकती है।

(13) 'कुछ और कितना'

यह एक कहानी समस्या प्रदान कहानी है। जिसमें विवाहेत्तर संबंधों में घिरी हुई आधुनिक नारी की मानसिक उथल-पुथल को चित्रित किया है जो जीवन में सुख की तलाश में भटकती हुई रिश्तों को भुलाकर भीड़ में कही खो जाती है। संबंधों का यह तनाव जिन्दगी जीने के एहसास को भुलाने पर मजबूर कर देता है। लगता है मानो कि जिन्दगी थम सी गई है। पति-पत्नी के अलगाव का परिणाम बच्चों को भुगतना पड़ता है। बच्चों को लेकर एक-दूसरे के बीच झगडे होते हैं। इस तरह दांपत्य जीवन का अलगाव विकराल स्वरूप धारण कर सकता है।

इस कहानी में मुख्य दो पात्रों है। एक मिसेज मेहता (मोना) दूसरा रमणीक जो दोनों पति-पत्नी है। जिसे यह दोनों का एक पुत्र है जो गुम हो जाता है। पुत्र गुम होने पर एक माँ की विहवलता की निरूपित करती है। मोना अपने पति से अलग रहती है। शायद इस अलगाव का कारण दोनों की यौन अतृप्ति हो। मोना का पति रमणीक किसी लड़की को भगाकर कलकत्ता चला जाता है। दूसरी और मोना नौकरी करती है, कई पुरुषों को अपना मित्र बनाती है। मोना अच्छे ढंग से रहती है। परन्तु

लोगों को तरह-तरह की भ्रान्तियाँ पैदा हो जाती है, कि वह सब ऐशो-आराम के लिए पैसा कहाँ से लाती है। वह इन सब बातों की परवाह न करते हुए सहज होकर अपने ढंग से जीती है।

रमणीक और मोना कई साल तक अलग रहते है। एक दिन मिसेज मेहता का लड़का अचानक ग़ायब हो जाता है। जिससे मिसेज मेहता दुःखी हो जाती है। अपने पति से जमकर टक्कर लेने की हिम्मत भी रखती है। अपने बेटे की खोज के लिए वह कलकत्ता, बनारस, इलाहाबाद, मुंबई जैसे महानगरों में खोजने का व्यर्थ प्रयास करती है। वह अपने बेटे को खोजने के लिए ज्योतिष तक का भी सहारा लेती है।

अपने बेटे की खोज में मिसेज मेहता रमणीक के पास कलकत्ता भी जाती है। वह कलकत्ता जाकर रमणीक के घर बड़ा हंगामा भी करती है। वह रमणीक की दूसरी पत्नी को धमकाते हुए बोलती है कि - "चाहूँ तो एक मिनिट में तुझे झोंटा पकड़कर यहाँ से बाहर निकाल दूँ, पर मुझे अब उससे कुछ लेना-देना नही है। लेकिन अगर तू मेरे बेटे को भी मुझसे छीनने की कोशिश करेगीं तो मैं खून पी जाऊँगी।"**90** इस तरह मिसेज मेहता को अपने पति के अलग होने पर नही हुआ था, उससे ज्यादा अपने बेटे के अलग हो जाने पर हुआ।

अपने बेटे को खोजते-खोजते मोना मानो अधपागल सी हो जाती है। इन सभी परेशानियों को कम करने के लिए वह सिगरेट और शराब जैसे कैफ़ी द्रव्यों का सेवन भी करने लगती है। "उसने सिगारेट सुलगाई और पीने लगी। मैं उसका कस खींचना और धुआँ छोड़ना देख रहा था। थोडी देर मिसेज मेहता अपने पुरुष मित्र से बात करती रहती है। फिर वह पर्स में से शराब की शीशी निकालकर पीने लगती है।"**91**

इस तरह यह कहानी में मिसेज मेहता अपने सभी अधिकारों को पाने के लिए संघर्षरत रहती है। वह अपने भाईयों से पैतृक मकान से हिस्सा भी लेना चाहती है। वह एक संघर्षशील नारी पात्र है। अपने जीवन में आई समस्याओं का साहसपूर्वक मुकाबला करती है। साथ ही साथ कहानी में नारी के वात्सल्य भाव को उद्घाटित किया गया है। अतःदेखा जाए तो कहानी में संवेदना के स्तर पर नारी की कसोटी की गई है।

(14) 'बाद की बात'

यह कहानी एक नारी कई पुरुषों के साथ घिरी हुई मन की व्यथा को चित्रित करती है। रोमा नाम की लड़की जो कही पुरुषों के संपर्क में आती है।

रोमा का सबसे पहले जिन पुरुष के संपर्क में आती है उसका नाम बलबीर है। बलबीर नामक युवक के साथ रोमा का तीन साल तक रोमांस चलता है। रोमा और बलबीर के रोमांस की बात सारे रेडियो स्टेशन को मालूम थी। दफ्तर में, स्टूडियो में, सैटिंग में, सिनेमा हाल में और रेस्तरां में यह बात बिना किसी झिझक के बिना किसी बंघन के आती-जाती थी। पर कुछ दिन से यह बात बाबात की बात हो गई थी। बलबीर का गोआ स्टेशन पर तबादला हो गया। बलबीर गोआ जाकर रोमा को दो-चार चिट्ठियाँ आई जिनमे वह यह तो लिखता था, कि रोमा मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है पर साथ में वह भी लिखता था कि गोआ की क्रिश्चियन छोकरियाँ खूब है और शराब का जो मज़ा गोआ में है, वह और कही नही।

यह सब कुछ दिनों चलता है, बाद में बलबीर की चिट्ठियाँ बंद हो गई। रोमा ने दो-चार चिट्ठियाँ लिखी पर जब बलबीर की तरफ से ठीक-ठीक जवाब नही आया तो उसने भी चिट्ठियाँ लिखनी बंद कर दी। रोमा ने

दो-चार महीने ऐसे ही कांट लिये बाद में वह सोचती है की अब मुझे शादी कर लेनी चाहिए। रोमा अपने माता-पिता को कहती है कि मेरे लिए लड़का ऐसा होना चाहिए "आमदनी डेढ हजार के ऊपर हो, चाहे जैसे हो। शादी के बाद में नौकरी नहीं करुंगी। देखने में थोड़ा बहुत स्मार्ट हो। उसके पास कार या कम से कम स्कूटर तो ज़रुर हो। रहता दिल्ली या बंबई जैसे बड़े शहर में हो। खाने-पीने का शौकीन हो। और मुझे कोई भी टोकमटोक न हो, साथ ही फेशन का महत्व समझता हो।"**92** रोमा की यह बातें सुनकर उसके माता-पिता ऐसा लड़का ढूंढने का प्रयास शुरू करने लगते है।

रोमा के लिए लड़का ढूंढना शुरू हो जाता है। तब ही रोमा के जीवन में दूसरा लड़का आता है। वह लड़का नाम अविनाश नामक एक विवाहित पुरुष का उसके जीवन में पर्दापण होता है। अविनाश एक पत्रकार है। उसके पास कार भी थी। रोमा के ईद-गिर्द बहुत से चेहरे मंडराने लगे थे, परन्तु रोमा ने निश्चय किया था- अब रोमांस नही, सिर्फ विवाह। और उसे अपने चारों ओर कोई विवाह वीर नजर नही आ रहा था। तब उसका अविनाश के साथ धीरे-धीरे संबंध विकसित हो गया अस्थायी संबंध, क्योंकि अविनाश विवाहित था। रोमा और अविनाश दोनों कार में घूमते है। तब ही अविनाश पूछता है कि - "कोई नया प्रयोजल है ? बलबीर की कोई चिट्ठी आई ?"**93** रोमा तुनक्कर कहती है कि - "उसका नाम न लो। और अभी तक कोई नया प्रपोजल नही आया है।"**94**

दोनों कार में चलते है और अंधेरा हो गया होता है। अंधेरे में दोनों एक- दूसरे में सिमट जाते है। यह सब डेढ-दो साल चलता है। ताजमहल के उधान में बैठे-बैठे रोमा ने पूछा - "अविनाश पत्रकार लोग तो विदेशों की बहुत सी यात्राएं करते है। तुम अभी तक कही नही गए?"**95** तभी अविनाश ने पूछा कि - "तुम कहां जाना चाहती हो?"**96** तब रोमा बोलती

है कि - “कनाडा। अविनाश आओ किसी तरह कनाडा चले जाएं। हम दोनों वहां से रुपया भेजते रहना।”**97** तब अविनाश कुछ भी नहीं बोलता है। वह सिर झुकाए घास तोडता रहा। इस दिन के बाद रोमा का एक नया रुप देखने को मिलता है।

रोमा की शादी के प्रयत्न भी लगातार चल रहे थे। इस बार कस्टम विभाग से एक अधिकार था, जिसे रोमा की शादी तय हो जाती है। एक दिन रोमा और अविनाश साउथ एक्सटेंशन के एक कोफी हाउस में बैठे हुए होते है, तब अविनाश सवाल किया करता है कि - “शादी के बाद हमारे संबंध किस तरह के होंगे?”**98** आज रोमा के पास यह बात का एक उत्तर था कि - “हम लोग तब भी अच्छे दोस्त रहेंगे ...... सिर्फ दोस्त।”**99**

इस तरह यह कहानी आधुनिक नारी की मानसिकता को दर्शाती है जो पुरुषों का बदलते रहने में शान महसूस करती है। पर भीतर ही भीतर टूटकर बिखर जाती है। और अंत में एक सही व्यक्ति की तलाश में सफल हो जाती है।

(15) ‘शोर’

यह कहानी आधुनिक जीवन के दबाव में परिवर्तित होते, एक दूसरे में उलझते स्त्री-पुरुष के संबंध पर प्रकाश डालती है। विवाह के द्वारा ही प्रेम संबंधों में स्थापित्य आता है। स्त्री-पुरुष के संबंधों का तनाव प्रेम संबंधों में भी तनाव उत्पन्न कर सकता है। वैवाहिक विघटन से स्त्री-पुरुष अन्य तीसरे व्यक्ति का साहचर्य चाहते है। दांपत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति के संपर्क से व्यक्ति का समाज में पतन शुरू हो जाता है।

कहानी में पति से त्यकता नारी की मानसिकता को चित्रित करती है। यह कहानी में स्त्री-पुरुष जो दोनों विवाहित होते हुए भी विवाहेत्तर

संबंध बनाये रखते है। उनको दो लड़के भी है। औरत अपने पति से कई सालों से अलग रहती है। जिस दफ्तर में औरत काम करती है, वह उसी दफ्तर में काम करनेवाले एक मर्द से मित्रता रखती है। दोनों साथ-साथ कई बार चाय, कोफी और नाश्ता करने जाया करते है। दोनों रेस्तरां पर कई घंटों तक बैठकर समय बिताते है। स्री अपने जीवन में एक परिवर्तन चाहती है।

एक दिन औरत अपने मर्द मित्र के साथ रेस्तरां में चाय-नाश्ता करते समय औरत कही खोई हुई सी नजर आती है। जो नाश्ता मंगवाया गया था उसे खाने का मन नही था उसका। तब मर्द मित्र बोलता है कि - "तुम जब भी मेरे साथ आती हो, कुछ भी नही खाती। देखो तुम्हारा कोफी का प्याला भी पुरा भरा हुआ है।"**100** दोनों चुपचाप एक-दूसरे की ओर देखते है। रेस्तरां में शोर इतना बढ़ जाता है की दूसरी आवाज़ सुनाई नही देती। उसी समय औरत मर्द से पूछती है कि - "क्या यह जिन्दगी ऐसे ही गुजरेगी।"**101** इस प्रकार औरत को कई प्रश्न और विचार आंदोलित करते है। "क्या मैं तुम्हें पा नही सकती? क्या ऐसा नही हो सकता ?"**102** औरत के विचारों से मर्द सहमत होते हुए कहता है कि - "तुम शायद यह कहना चाहती हो की क्या हम शादी नही कर सकते ? क्या मैं तुम्हें किसी दूसरे देश में भगाकर नही ले जा सकता, जहां तुम्हारा पति हमारा पीछा न कर सके।"**103** मगर औरत कुछ अलग ही सोचती है कसमसाते हुए कहती है "मैं मरना चाहती हूँ। पर एकदम नही, क्या ऐसा जहर नही जिसे खाकर मैं धीरे-धीरे मरूं। किसी को पता भी न लगे की मैं जहर खाकर मरी हूँ।"**104** इस तरह दोनों के बीच काफी समय तक बातचीत चलती रहती है।

औरत उस मर्द के साथ भाग जाने के लिए भी तैयार है लेकिन मर्द न तो उस औरत के घर छोड़ने को स्वीकार कर पाता है और न ही स्वयं

को आर्थिक रूप से इस तरह का दायित्व निभाने में समर्थ पाता है। साथ ही अपने विवाहित होने का अहसास उन्हें सहज नही होने देता। इसलिए मर्द प्रेम संबंध की सधनता को जीते हुए तथा औरत की बेचैनी को समझते हुए भी जानता है की वे ऐसे ही जिएंगे। “क्या जिन्दगी ऐसे ही गुजरेगी ?औरत बोली कोफी पीते हुए मर्द ने प्याला रखकर औरत की तरफ देखा। आर्केस्ट्रा का शोर एकदम तेज हो उठा। दोनों एक-दूसरे की तरफ देख रहे थे दोनों कुछ बोले नही। शोर इतना था कि कुछ बोला ही नही जा रहा था। यह जिन्दगी और किस तरह गुज़र सकती है? मर्द बोला।”**105**

इस कहानी में स्री-पुरुष के तनाव और सचेत प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति हुई है। स्री जीवन में परिवर्तन नही ला सकती, उसकी घुटन व निराशा को यहाँ अनुभव किया जा सकता है। यह महानगर की एक जीवन पद्धति बन गई है कि ऐसे विवोहतर प्रेम संबंध एक दूसरे के पारिवारिक जीवन में खलेल डाले बिना सहजता से निभाते है। ऐसे संबंधों में अतृप्ति की यातना के अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त नही होता।

(16) ‘कटाव’

यह कहानी में नारी की विवशता को दर्शाई गई है। यह कहानी में तीन पात्र हैं। पति, पत्नी और प्रोफ़ेसर। पति-पत्नी के बीच असम्बध्दता है। शीला अपने समय में कॉलेज में बेस्ट एथलीट थी। उसका विवाह एक ऐसे व्यापारी से जो बर्तनों का व्यापार करता है जो दिखने में कुरुप भी है। कहानी में मध्यमवर्गीय समाज की मानसिकता का अच्छा उदाहरण भी दिखाई गया है।

एक दिन शीला और उसका पति मनोहर शादी के समारोह में जाते है वहाँ पर शीला को अपने कॉलेज के प्राध्यापक को नमस्कार करती है

मगर वह पहचानते नही है। शीला मुस्कराई को बोलती है “शायद आपने मुझे पहचाना नही।”**106** प्राध्यापक कहता है “नही। आप किस वर्ष हमारे कॉलेज में थी? हां याद आया शायद आप बेस्ट एथलीट चुनी गई थी न .... ?”**107** शीला को जोड़ी देखकर प्राध्यापक को बहोत दुःख होता है। शीला कॉलेज की गौरव थी, आज वह घर की चार दिवालो में बंध हो गई है।

शीला अपने बेमेल पति, संयुक्त परिवार तथा अनचाहे जीवन के साथ सामंजस्य बैठाने का प्रयास कर रही है। कहानीकार ने इस जोड़े को ‘ब्यूटी एंड बीस्ट’ से अभिभूत किया है। प्राध्यापक शीला के पति से पूछते है कि - “आप क्या करते है? बर्तनों का बिज़नेस है। बर्तनों का बिज़नेस .... पत्नी बेस्ट एथलीट ।”**108**

शीला इस जीवन में आकर तो जी रही है, किन्तु भविष्य के जो सपने सजोया थे वे पूरे नही कर पाई। इसलिए जब-जब उसे अपने कॉलेज जीवन की याद आती है या उस जिन्दगी से संबंधित कोई व्यक्ति मिल जाता है तब वह क्षण उसके लिए कष्टमय बन जाता है। “शादी के पहले किसी एक्सीडेंट में उसकी एक उंगली कट गई थी। कभी-कभी उस कटी हुई उंगली में तराटे पड़ने लगती है और बहुत दर्द होता है। कल रात यहाँ से जाने के बाद उसे वही दर्द शुरू हो जाता है। वह सारी रात चीखती रही।”**109**

इस तरह यह कहानी में एक लड़की अपनी सारी इच्छापूर्ति को भुलाकर अपने विवाहित जीवन में रच जाती है। एक पढ़ी-लिखी, अपने समय की श्रेष्ठ खिलाड़ी लड़की को महज एक घरबार सम्भालने वाली औरत का जीवन बिताना पड़ता है। यहाँ पर उसका व्यक्तित्व दांव पर

लग जाता है। यह एक ऐसी पीड़ा की छटपटाहट है की वह टूट जायेगी या फिर मर जायेगी।

(4.1.3) तृतीय खंड - “संबंधों का सन्नाटा”

“संबंधों का सन्नाटा” खंड 1973 से लेकर 1999 तक लिखी गई कुल 34 कहानियां संग्रह है। इस संग्रह का प्रथम प्रकाशन सन् 2000 में प्रकाशित किया गया है। इस संग्रह की ज्यादातर कहानियां विविध पात्र-पत्रिकाओं में आ चुकी है।

“सन्नाटा” आज के युग की देन है जो मनुष्य के बाहर भीतर छाया हुआ है और धीरे-धीरे संबंधों को भी आवृत्त कर रहा है। नगरों और महानगरों में पाश्चात्य संस्कृति, यांत्रिकता, आधुनिकता साथ ही व्यस्तता के कारण मनुष्य अकेलापन, अजनबीपन, संत्रास, कुंठा, तनाव, ऊब, निराशा, ईर्ष्या, स्पर्धा जैसी आदी विसंगतियों से त्रस्त जीवन-यापन के लिए मजबूर है जिससे परिवार एवं, अन्य संबंधों के बीच एक दयनीय, संकटमय, एवं भयावह सन्नाटा छाया हुआ है जिनसे सभी संबंध टूटकर बिखर रहे है। मनुष्य इन आत्मीय संबंधों को जीता नही है बल्कि उन्हें ढोने के लिए विवश है। कहानीकार इस खंड की कहानियां में यह सन्नाटा सुन्दर एवं मार्मिक ढंग से चित्रित हुआ है।

यह खंड में कुल 34 कहानियां में चुनी हुई नारी पात्रों की कहानियां का चित्रण करने वाली कहानियां का विश्लेषण निम्नलिखत है।

(1) ‘सन्नाटा’

आज के समय में पारिवारिक संबंध औपचारिक होते जा रहे हैं। आज के मनुष्य मानवीयता को भूलकर बहोत सारे झूठे दिखावे करते है।

साथ-साथ रहते हुए भी परिवार में अपनापन अब नही रहा है। ऐसी परिस्थिति में स्री भी आ जाती है।

'सन्नाटा' कहानी में महानगरीय तथा आधुनिक जीवन की देन- अलगाव और अकेलेपन को दर्शाया गया है। महानगरीय जीवन की ऊब एकाकीपन और रिक्तता को माँ-बेटी के संबंधों के माध्यम से दर्शाया गया है। कहानी में मिसेज वर्मा और किटी माँ-बेटी का रिश्ता है।

आज संबंधों की उष्मा को महानगर की भागदौड़ भरी जीवन पद्धति ने अच्छादित कर लिया है। मिसेज वर्मा और किटी दोनों के बीच प्यार-ममता है एक ही छत के नीचे रहती है परन्तु दोनों के बीच संबंधों की उष्मा बरकरार नहीं है। मिसेज वर्मा के शब्दों में "कैसी अजीब बात है। हमारे बीच जब तक तीसरा व्यक्ति न आए हमें यह अहसास ही नही होता कि हम माँ-बेटी है। हमें आपस में बात किये हफ्तों गुज़र जाते है।"**110** मिसेज वर्मा की बात से स्पष्ट होता है की दोनों घर में निर्जीव चीज की तरह है। जिस तरह टेलिविज़न, रेडियोग्राम, डायनिंग टेबल, सोफासेट सब निर्जीव चीज़े अपनी-अपनी जगह पड़ी रहती है। माँ-बेटी की स्थिति ऐसी है कि किसी को एक दूसरे से कोई भी मतलब नही है।

माँ-बेटी के साथ रहते हुए भी अकेली और अजनबी हो गयी है। आज की नगरीकरण व यांत्रिकता ने व्यक्ति को अकेला और एक दूसरे के लिए अजनबी बना दिया है। उन दोनों के बीच फैला यह सन्नाटा किसी तीसरे व्यक्ति की मौजूदगी से ही कभी-कभी टूटता है। मिसेज वर्मा कहती है "मेरा भी कोई परिवार है .... मैं और किटी माँ-बेटी है। कैसी अजीब बात है। हमारे बीच जब तक कोई तीसरा व्यक्ति न आए, हमें यह अहसास ही नही होता है कि हम माँ-बेटी है। हमें आपस में कोई बात किए हफ्तों गुज़र जाते है। फ्लैट में एक दूसरे की छाया देखकर हमें बस

एक दूसरे के होने का अहसास होता है। अलग-अलग कमरे, अलग-अलग बाथरुम, यहाँ तक कि टूथपेस्ट भी अलग-अलग।"**111**

किटी के बारे में मिसेज वर्मा उदासीन रहती है। वह मैं को किटी के विवाह के बारे में बताती है, "शादी के बारे में वह खुद सोचेगी .... जब, जहाँ, जिससे चाहेगी शादी कर लेगी।"**112** जिसकी माँ इतनी उदासीन हो उसकी बेटी का स्वच्छन्दी बनना स्वाभाविक है। जवान लड़की इतनी रात गये कहाँ जाती है। क्या करती है, किससे मिलती है, इन सब बातों से अंजान रहती है। अपने कर्तव्य से भागना चाहता है।

दोनों माँ-बेटी दोनों व्यवहार और विचार से स्वतंत्र है। एक ही घर में साथ- साथ रहते हुए भी सब अलग-अलग है। चाबियों के तीन गुच्छे भी अलग-अलग रखे जाते है। जो एक मिसेज वर्मा के पास दूसरा किटी के पास और तीसरा आनेवाले मेहमान के लिए रहता है। दोनों सुबह जल्दी से अपने-अपने काम पर जाती और देर रात को लौटती थी। दोनों का खाना घर से बाहर होटल में ही हो जाता है।

इस तरह यह कहानी में माँ-बेटी का रिश्ता औपचारिक बना रहता है। दोनों साथ में रहते है फिर भी अलग-अलग अपनी जिन्दगी जीते है।

(2) 'धूप की उंगलियों के निशान'

यह कहानी स्त्री-पुरुष के संबंधों के विभिन्न उलझे हुए विभिन्न मानसिक स्तरों के उदघाटित करती है। यह कहानी में यह उभर कर आता है कि आज स्त्री पुरुष के सहारे के बिना भी सक्रिय जीवन व्यतीत कर सकती है। वह अपने जीने का ढंग खुद चुन कर विषम परिस्थितियाँ से जूझकर जीवन जीने के लिए तैयार है।

यह कहानी का शीर्षक 'धूप' कही 'उगता' के प्रतीक के रुप में दिखाई देता है तो कही पात्रों को मानसिक तनाव की स्थितियों का प्रतीक है। कही पर परिस्थितियाँ की भीषणता तो कही यातना को बढ़ानेवाली स्थिति के प्रतीक के रुप में दिखाई देती है। यह कहानी में दो पात्रों का उल्लेख किया गया है, वह है पति और पत्नी।

कहानी में पति अपनी नौकरी करने वाली पत्नी के सामने स्वयं को छोटा महसूस करते है। इसी कारण उनके दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य नही बैठता और संबंध विच्छेद हो जाता है। यहाँ पर पत्नी नीता सचेतन दृष्टि की परिचायक है क्योंकि वह जान जाती है ऐसी दमधोट् स्थिति से तो अच्छा है अलग-अलग रहकर जीवन व्यतीत करना ठीक है। इसलिए वह पति से संबंध तोड़कर सहज होकर जीवन जीती है साथ ही अपने बेटे को भी साथ ले जाती है और उसका भी भरण-पोषण भी करती है।

तलाक़शुदा पति-पत्नी सात वर्ष के बाद अचानक मिलते है। पति किसी काम से दिल्ली आता है वहाँ उसे अपनी पहली पत्नी से अचानक मुलाकात हो जाती है। जब वह दोनों मिलते है तब नीता अपने पति को पूरा सम्मान देती है। नीता अपने पूर्व पति के पूर्व जीवन के बारे में कुछ भी नहीं कुरेदती तथा कहती है, नीता अपने पति को कहती है कि - "हम पति-पत्नी नही हैं .... पुराने रिश्ते टूट चुक है .... पर हम एक-दूसरे के दुश्मन भी नही हैं न?"**113** यह सुनकर पति जल्द ही बोलता है "नही-नही .... दुश्मनी तो उस समय भी नही हुई जब हम लोग टूट रहे थे ....।"**114** दोनों पति-पत्नी की तरह नही बल्कि मित्रों की तरह पेश आते है। दोनों के भीतर एक हलचल सी मच जाती है।

दोनों फ्लैट में साथ में रात गुज़ारते है। दोनों के बीच ऐसे ही बातें हो जा रही थी। अचानक से पति नीता से पूछता है कि - "तुमने दूसरी

शादी क्यों नही की?"**115** नीता बोलती है कि - "बस ऐसे ही ...... आप के लिए दूसरी शादी करना आसान था-आपको सिर्फ एक औरत चाहिए थी। परन्तु मुझे सिर्फ एक मर्द नही चाहिए .... और संसार में ज्यादातर पुरुष सिर्फ मर्द दिखाई देते है। फिर भी .... कभी कुछ ठीकठाक लगा तो शायद शादी कर लूं।"**116** पत्नी में इतना आत्मबल है कि वह परित्यकता होने पर अपना व अपने बेटे का गुजारा चला रही है तथा न ही उसे पूर्व पति से इतना गुस्सा है, बल्कि उसके साथ मित्रवत् व्यवहार करती है।

इस तरह कहानी में पत्नी परित्यकता होने पर भी वह सहारा नहीं ढूँढती है। अपने बेटे को पालती है खुद नौकरी करती है और समाज में सम्मान के साथ आत्मनिर्भर बनकर जीवन व्यतीत करती है।

(3) 'लय'

यह कहानी स्त्री-पुरुष के साथ- साथ मानवीयता को भी दर्शाती है। हमारे समाज में जब एक पुरुष एक अबला नारी की मदद करता है तो उसकी पत्नी शक की नज़रों से देखती है और सोचती है की उसके पति का उस औरत के साथ चक्कर चल रहा है।

इस कहानी में पति-पत्नी और उनके दो बच्चे भी है। एक और एक महिला मित्र है जो विधवा है उसकी एक बेटी भी है। कहानी में जब पति किसी महिला मित्र की सहायता करना चाहते है तो पत्नी रितु की खीझ बढ़ जाती है। पति की एक महिला मित्र हैं, वह उसकी लड़की की शादी में आने के लिए पत्र लिखती है। लखनऊ से नीला ने पत्र लिखा था "दीपा की शादी पक्की हो गई है। तुम्हें रितु को और दोनों बच्चों को इस मौके पर ज़रुर आना है। दीपा की इस अवसर पर बाप की कमी बहुत महसूस होगी। आखिर दीपा भी तुम्हारी बेटी है।"**117** यह सब पढ़कर रितु का मूड

गडबड़ा जाता है। शाम को जब पति घर आता है तो रितु कहती है तुम्हारी सहेली नीला का पत्र आया है तुम्हें बुलाया है।

नीला की लड़की को वह अपनी लड़की के समान ही मानता है, क्योंकि उसके पिता का देहांत हो चुका है। रितु यह सोचती है, पति के इस स्री से संबंध है और इस कारण वह कुढती रहती है "वह जानता है, कुछ बातें ऐसी होती है जिनके कारण रितु खीझती है और फिर खीझती ही रहती है। कभी-कभी इसकी अवधि दो चार दिन भी हो जाती है और कभी-कभी लम्बी खींच जाती है। उसकी यह खीझ बच्चों पर उतरती है। घर के नौकर रुलदू पर उतरती है।"**118**

इस तरह कहानी में पति के विवाहेत्तर संबंधों से उनकी गृहस्थी में मधुरता कायम नही रहती। पत्नी खीझ के दौरों से ग्रस्त हो जाती है और वह अपना गुस्सा किसी अन्य व्यक्ति पर निकाल कर ही सहज हो पाती है।

(4) 'कल'

यह कहानी महानगरीय अकेलेपन को चित्रित करती है। कहानी में एक नारी बढती आयु में अपने परिवार से अलग रहना पड़ता है। वह अपनी जिन्दगी अपने हिसाब से जीती है।

यह कहानी में जस्सी व्यापक दृष्टिकोण वाली महिला है। विघवा जस्सी दिल्ली में अकेली रहती है। उसके एक लड़का व लड़की है। पति की मृत्यु के बाद उसे बुरे दिन देखने पड़ते है। उसका लड़का शादी के बाद अपनी बहू को लेकर कनाडा जा बसता है तथा लड़की भी शादी के बाद उससे मिलने नही आती, क्योंकि उसके पति की उसकी माँ के साथ कुछ अनबन है।

जस्सी घर में अकेली रह जाती है, परन्तु यह समय उसे खलता नही है। ऐसी परिस्थिति में भी वह अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल बनाकर उनके साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करती है। “इन्दर उसका बड़ा बेटा जो नियमित रूप से मुझे याद करता है। दिसम्बर में उसका नए साल की बधाई वाला कार्ड आ जाता है। जून में वह मेरे जन्म दिन पर एक कार्ड भेजता है।”**119**

इस तरह जस्सी अपने पति की मौत व संतान के उपेक्षित व्यवहार के बाद भी अपना जीवन व्यतीत करती है। अपने मित्र-दोस्तों के साथ हँसी-खुशी बाँटकर जीवन बिताती है। जस्सी में थोड़ी असुरक्षा की भावना तो है, परन्तु वह इन सब बातों में से घबराकर जीवनोविमुख नही होती, बल्कि जीवन को सक्रियता के साथ जीना चाहती है।

अकेलापन महानगर की देन है। दिल्ली जैसे महानगर में अकेले जीवन यापन करना खतरे से खाली नही है। फिर भी जस्सी जैसे लोग हर दिन अपनी मृत्यु के भय में आशंका में कल और आज के बीच के फासले कम करते जीने पर विवश है।

(5) ‘ऐसा ही है’

यह एक पारिवारिक कहानी है। इसमें आज की नारी का आधुनिक जीवन शैली से उभारा है। कहानी में माया नामकी नारी है जो अपना जीवन अपने ढंग से जीना चाहती है। अपने पति से अलग होती है, मगर कुछ साल के बाद अपने बेटे से भी अलग हो जाती है। यहाँ पर आघुनिकता निकलकर आती है।

माया नामकी नारी बचपन से उसके मन में एक बात बैठ गई थी कि- “संसार में रिश्ता नाम की कोई चीज़ नहीं है। ये बनते बिगड ते रहते है। अगर कोई असली चीज है तो वह ‘स्व’ है। उसी की तृप्ति के लिए

उसी को ज़िन्दा रखने के लिए संसार में सभी काम किए जाते हैं।”**120** इस बात की तरह ही माया जीना चाहती है।

फिर कुछ सालों के बाद माया की शादी मोहन जोशी से हो जाती है। माया का पति कॉलेज में पढ़ाता था। जब माया कॉलेज में पढ रही थी, उसी समय उसके मन में एक बात और घर कर बैठ गई थी कि - “पति कोई बड़ी महिमाशाली चीज नही है। अनेक कारणों से जिन्दगी में उसकी जरुरत होती है। उसमें एक कारण यह भी है की वह एक बहुत अच्छा सुरक्षा कवच है। समाज में विचरते समय वह आदमी जो थोड़ा पीछे-पीछे रहता है और जिसका यह कहकर परिचय दिया जाता है। मीट माय हस्बैंड, निर्वाह करने के लिए ठीकठाक पति होता है। पति कोई बहुत लिफ्ट देने की चीज भी नही है। उसे अपनी जगह पर रखना चाहिए। सही बात तो यह है की दुनिया में हर रिश्तों, हर सम्बन्ध को अपनी जगह पर रखना चाहिए।”**121**

माया की जिन्दगी में मोहन जिस रफ्तार से आया था, लगभग उसी रफ्तार से बाहर चला गया। लेकिन जाते जाते माया को माया के चक्कर में बांधने के लिए एक बेटा दीपन दे गया। माया एक कंपनी में नौकरी करने लगी थी। माया को हमेशा ऐसा लग रहा था की मोहन उसे लूटना चाहता है। माया कहती है मोहन को कि - “तुम्हारी जिन्दगी में कोई गति नही है। दो किताबें उठाई और क्लास में चले गए। थोड़ी देर उबासी लेते हुए लड़के-लड़कियों के सामने कुछ बकबक की और नाक से नीचे ढले चश्मे को फिर से अपनी जगह पर खिसकाते हुए गंभीर चेहरा बनाकर क्लास से बाहर आ गए। व्हेअर इज द थिल .... ?”**122**

माया का कहना है की समाज में रहने के लिए औपचारिक रूप से पति का होना जरूरी है। वह अपने पति को पैर की जूती समझती है,

“तुम सारी जिन्दगी अपनी लम्बी नाक पर चश्मा चढाते-उतारते रहो, लेकिन एक स्कूटर से ज्यादा अफोर्ड नही कर सकते। .... कंपनी अगले साल मुझे फॉर व्हीलर लेकर दे रही है।”**123** पत्नी के इस तरह के व्यवहार से पति के अहं को ठेस पहुँचती है एवं उनमें संबंध विच्छेद हो जाता है।

माया अपने पति के होते हुए भी कई पुरुषों से संपर्क रखनेवाली माया पति को सुरक्षा कवच समझती है। मनमुटाव के कारण दोनों अलग हो जाते हैं। पुत्र दीपन को बारहवीं कक्षा तक शिक्षा देने के बाद माया उसे भी खुद से अलग कर देती है। वह अपना जीवन अपने ढंग से जीना चाहती है। वह इस बात से घबराती है की पुत्र की नजर अपनी संपत्ति पर न पड़े। पुत्र को फ्लैट दिला देती है, उसकी शादी करती है, लेकिन एक पैसे का हिसाब रख सबकुछ वसूल करती है।

आर्थिक दृष्टि से अत्यंत संपन्न माया आधुनिक जीवन शैली में बहते हुए, पर पुरुषों के संघ शराब पीते हुए अपने ढंग से जीना चाहती है, अकेली रहना चाहती है। उसकी दृष्टि में संबंधों का कोई मोल नही। संबंधों से ज्यादा वह धन को महत्व देती है। आर्थिक संपन्नता से टूटते बिखरते संबंधों पर प्रकाश डालना इस कहानी का उद्देश्य माना जाता है।

(6) ‘पति’

यह एक पारिवारिक कहानी है। कहानी में नारी को अपने ढंग से अपना जीवन जीने का हक नही समझा जाता है, ऐसा बताया गया है। कहानी में पति पत्नी और उनके दो बच्चे का पात्र है। उनको एक बेटा और एक बेटी है। पति का नाम कर्नल मेहता है और पत्नी का नाम मालती, बच्चों का नाम पारश और मोनिका है। पारश कम्प्यूटर का पढ़ना चाहता है जब की मोनिका राजनीति में जाना चाहती है।

मालती और कर्नॅल मेहता दोनों शादी के बाद भी अपने-अपने हिसाब से जिन्दगी जीना चाहते है। वो एक दूसरे को समज नही सकते है। मेहता इंच-दर - इंच आर्मी आफिसर था .... हैपी गे फास्ट हर चीज पर झपट पड़ने वाला .... हर चीज को तोड़-मरोड़ डालने वाला। सभी मामलो में एकदम चुस्त-दुरुस्त और नाक की सीघ में देखने वाला। मालती में ऐसा कुछ भी नही था। धीरे -धीरे बोलने वाली, एकदम मासूम .... मनीटलांट की ताज़ा कोंपल की तरह। उसके तीखे नैन-नक्शा और सुबह की सूरज जैसी काया।

मालती और मेहता की शादी के कुछ ही समय बाद दोनों को लगा- नोट मेड फॉर इंच अधर। मेहता को लगा - "इसे आर्मी आफिसर की बीवी नही किसी कॉलेज टीचर की सुघड पत्नी होना चाहिए।"**124** मालती सोचने लगी - "क्या पति सचमुच ऐसा होता है ? वह उसके सानिध्य में आती तो महसूस करती जैसे किसी भेड का गोरा-चिट्टा मेमना किसी खूंखार चीत्ते के पंजे में आ गया है।"**125**

कर्नल मेहता और उनकी पत्नी मालती के विचारों में विभिन्नता के कारण उन दोनों की नही बनती। मेहता चाहता है, उसकी पत्नी एक अफ़सर की पत्नी की तरह रहे, परन्तु वह एक समाज सेविका बनकर रहना चाहती है। वह जब पति के साथ रहती है तो जवानों की पत्नी, बच्चों से मिलती है तथा उनके घर जाकर उनके दुःख, तकलीफ़ पूछती है। परन्तु कर्नल मेहता को पत्नी का इस तरह का व्यवहार पसंद नही है। इसी कारण उनके बीच एक दूरी बनी रहती है। "हम दोनों एक दूसरे को नही समझ सकते......... नदी के किसी बहते प्रवाह में दो लकड़ी के टुकड़ो की तरह हम एक-दूसरे के नज़दीक आ गए है पर हम दोनों मिलकर किसी किश्ती का रूप धारण कर में ऐसा नहीं हुआ है।"**126** दोनों के विचार इतने नही मिलते- झूलते है की मेहता अपनी बेटी को आधुनिक

विचारों के अनुसार बनाना चाहता था। मगर मोनिका बड़ी होकर माँ के अनुरूप राजनीति को अपना कैरियर चुन लेती है।और अपने बेटे को कर्नल बनाना चाहता है, मगर वह कम्प्यूटर की पढ़ाई करना चाहता है।

कहानी में इस तरह पति-पत्नी के विचारों में सामंजस्य नही बैठ सकता इसलिए उनके संबंधों में कभी प्रगाढ़ता नहीं आ पाती। मालती को समाज-सेविका बनकर समाज का भला करना है उसमें ही उसका ध्येय है मगर मेहता को अपने प्रतिष्ठा के हिसाब से अपनी पत्नी चाहिए। इसी कारण दोनों अलग हो जाते है।

(7) 'काल संध्या'

यह कहानी एक विवाहेत्तर संबंध कहानी है। स्त्री और पुरुष के नौकरी वाले पेसे में प्रेम संबंध की बात की गई है। स्त्री का पति गणित का अध्यापक है। शाम को वह अपना एक कोचिंग सेन्टर चलता था और काफी रात तक वह गणित में कमजोर विघार्थियों के साथ जूझता रहता था। वहाँ पर पुरुष की पत्नी घरेलू है। जो अपना घर, पति और बच्चों को अच्छी तरह संभालती है।

पुरुष एक दैनिक समाचार पत्र में काम करना था। स्त्री उसी समाचार पत्र समूह की ओर से निकलने वाली एक महिला पत्रिका में काम करती थी। दोनों के दफ्तर एक ही बिल्डिंग में थे। दोनों आगे पीछे दफ्तर में जाते थे, पर ज्यादातर निकलते साथ-साथ थे। फिर दोनों टहलते हुए एक छोटे से रेस्तरां में जा घुसते। लकड़ी की कुछ सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आते और जो कैबिन खाली होती उसमें आमने-सामने बैठे जाते। दोनों को प्रेम वीस वर्षो से उनका प्रेम चल रहा था।

स्त्री सम्पादक पुरुष से इतनी प्रभावित है कि उसे जीवन भर अपना दोस्त बनाना रखना चाहती है "एक वायदा करो .... तुम जीवन भर

मेरे दोस्त बने रहोगे। पुरुष ने उसका हाथ अपने दोनों हाथों में ले लिया। फिर उसी कैबिन में दोनों के होठों ने जुड़कर खूब रस पिया। यही उनकी सीमा बन गई।"**127**

पुरुष पहले संस्थान से प्रकाशित अखबार का उपसंपादक था। फिर वह सहायक संपादक बन गया। संपादक की कुर्सी अभी एक और सीढ़ी ऊपर थी। स्री भी धीरे-धीरे सीढ़ियां चढते हुए मुख्य उपसंपादक की कुर्सी पर पहुँच गई थी। दोनों के ही बच्चे बड़े होकर कॉलेज में पहुँच गए थे। मास्टर जी ने रिटायमेंट लेकर अपना पूरा कोचिंग सेन्टर खोल लिया था और बड़े तृप्त भाव से खूब पैसे कमा रहे थे। पुरुष की सुघड़ पत्नी से पत्नी का जामा कब का उतार दिया था। अब उसे दिन -दिन बढती बेटी की चिंता रहती थी, जो कमर्शियल आर्ट की डिग्री लेकर हमेशा हाथ में काली कूंची लिए रहती थी और हाथ पीले करने की अपनी माँ की अभिलाषा को झुठलाती रहती थी। फिर भी स्री और पुरुष का प्रेम चलता ही रहता है।

यहाँ पर कहानी में वैवाहित जीवन होने पर भी दोनों प्रेम में पड़ते है। यहाँ स्री के लिए विवाहेत्तर संबंध दाम्पत्य जीवन में कोई विघ्न बाधा खड़ी नही करते है।

(8) 'माँ'

यह एक पारिवारिक कहानी है। इस कहानी में कुल तीन पात्र है। पति-पत्नी और उसकी एक बेटी है। कहानी शुचि के अवलोकन बिन्दु से लिखी गई है हालांकि वह नैरेटर नही है, लेकिन उसी के मानस को लेखक ने इस परिवार के जीवन का दर्पण बनाया है। वह अपने माता-पिता के विषय में जो कुछ जानती है तथा उनके क्रिया-कलापों से जो अक्स उसके

मन पर बनते है और वह स्वयं जो क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं करती है, उन्ही से कहानी आकार ग्रहण करती है।

यह कहानी की शुचि माँ एवं पिता के बीच सामंजस्य बिठाने वाली लड़की है। उसके माँ-बाप दोनों नौकरी करते हैं। वह उनकी व्यस्त, विघ्न-बाधाओं से भरपूर दिनचर्या में एक नया संचार पैदा करती है। माँ एवं बाप के बीच कभी अनबन हो जाने पर भी वह उनके साथ हँसी-मज़ाक करके स्थिति को सामान्य करती है।

शुचि की माँ सरिता एक मल्टीनेशनल कंपनी में पब्लिक रिलेशन असिस्टेड के रुप में काम करती है। बहुत जल्दी ही उसका प्रमोशन होता है, वेतन भी बढ़ जाता है। यशवंत सरीन बैंक में डिप्टी जनरल मैनेजर है। वे जनरल मैनेजर बनने के सपने देखते है। लेकिन राजनीति के हस्तक्षेप से यह पद किसी ओर को मिलता है। पति सरीन पत्नी सरीता को अपने अनुसार ढालना चाहते है, परन्तु सरीता उससे ऊँची पदवी पर है। वह पति से दबकर नही रहना चाहती। पति धीरे-धीरे एक हीन ग्रंथि से ग्रस्त होकर कुढने लगता है उनके बीच कभी मघुर संबंध न हो सके। इसी बात से वह कुढन में मर जाता है। पति-पत्नी दोनों के बीच रिश्तों में दरारा पड जाती है। कारण अघिक वेतन पानेवाली पत्नी थी। पत्नी इस बात को स्वीकार भी करती है कि - “मम्मी एकदम फफक उठी-शुचि तेरे डैडी की मौत की मैं जिम्मेदार हूँ। क्या कहती हो मम्मी .... ? वह ऐसे चौंकी जैसे बिच्छू ने डंख मार दिया हो -आप जिम्मेदार क्यूँ है ? मैं उन्हें पल-पल टूटता .... पल-पल मरता देखती रही .... मैंने कुछ नही किया। उनकी आँखों से आँसू बहते चले जा रहे थे।”**128**

पिता की अकस्मात मृत्यु से वह माँ का धैर्य बांधती है। पिता की मौत के ग़म को भुलाकर उसे सामान्य दिनचर्या में आ जाने के लिए

प्रेरित करती है। **“**शुचि ने उसके गले में अपनी बाँहे डाल दी - ‘तुमसे अच्छी मेरी कोई सहेली नही है मम्मी।’ नाश्ता करने के बाद शुचि ने एक प्लेट में डाई डाली - ‘मम्मी जरा इधर आना और हां, चुपचाप आकर यहाँ बैठ जाओ।’ ...... आपके बाल ठीक कर रही हूँ .... और हाँ .... कल से आप अपनी ड्यूटी ज्वाइन करेंगी।**”129** शुचि जीवन में आए गतिरोध को दूर करने में सक्षम है। वह माँ-बाप की नोक - झोंक के दौरान खुद सहज रहकर स्थिति को भी सहज बनाए रखती है, तथा पिता की मौत के बाद मम्मी को मौत का ग़म भुलाकर जीवनोन्मुख दृष्टि प्रदान करती है। क्योंकि वह जानती है की पिता तो किसी कारणवश दिवंगत हो गए,परन्तु माँ को पिता के शोक में जीवन से विरक्ति पैदा न हो इसलिए वह सामान्य होकर जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है।

माँ कहानी का उद्देश्य इतना है की पति को शिक्षित,आत्मनिर्भर पत्नी अच्छी लगती है, लेकिन अपने से अधिक शिक्षित,जागरुक या अधिक वेतन पानेवाली पत्नी उसकी हीन ग्रंथि जाग जाती है, संबंध टूट जाते है।

*** निष्कर्ष**

इस तरह महीप सिंह की समग्र कहानियाँ में से हमने नारी के अलग-अलग स्वरूप वाली कहानी का अध्ययन करने पर हम कह सकते है कि उनकी कहानियाँ में जीवन की प्रायः समस्याओं का चित्रण किया गया है। इनकी कहानी में साहित्य संघर्ष और टकराव की कहानियाँ है। यहाँ पर नारी के जीवन की संबंध से टकराते है।

इनकी कहानियाँ लगभग महानगर के मध्यम परिवार के उदघाटित नारी की है, जिनमें व्यक्ति परिवार, समाज के बीच बनते बिगडते संबंधों का चित्रण हुआ है। ज्यादातर कहानियाँ के अध्ययन से पता चलता है की

नारी के जीवन से संबंधित है। नारी के साथ-साथ उनके आस-पास रहने वाले व्यक्तियाँ के साथ जूडा है।

हम सभी जानते है की कहानी में विषय की तरह पात्र और चरित्र-चित्रण भी एक महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। महीप सिंह ने जब समाज के अनुरूप ही कहानी लिखते थे, तो पात्रों का चयन भी समाज से ही सकता है। कहानीकार ने जिस जीवन को जिया है तथा आसपास जिस वर्ग के पात्रों का अनुभव है उन्ही को सजीव रुप से कहानी में ढाला है।

महीप सिंह की एक विशेषता यह है की उनकी कहानियाँ में पात्रों के रूप में स्री-पुरुष, पौढ-बूढ़े, युवक-युवतियाँ, बच्चे भी नजर आते है। उनकी कहानियाँ में नारी पात्र अघिक रुप में उभरकर सामने आयें है। क्योंकि नारी की सामाजिक स्थिति और उसकी दयनीयता सदा उन्हें कचोटती रहती है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

(1) डॉ.पुष्पपाल सिंह, कथाकार महीप सिंह - पृ - 37

(2) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'मैडम' - पृ - 16

(3) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'उलझन' - पृ - 25

(4) वहीं - पृ - 26

(5) वहीं- पृ - 26

(6) वहीं - पृ - 28

(7) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'वेतन के पैसे' - पृ - 40

(8) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'एक्स्ट्रा' - पृ - 54

(9) वहीं - पृ-54

(10) डॉ.महीप सिंह, इक्यावन कहानियाँ, 'एक स्त्री एक पुरुष' - पृ - 51

(11) वहीं - पृ - 51

(12) वहीं - पृ - 52

(13) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'एक स्त्री एक पुरुष' - पृ - 86

(14) डॉ.महीप सिंह, इक्यावन कहानियाँ, 'शास्त्री जी' - पृ - 66

(15) वहीं - पृ - 66

(16) वहीं - पृ - 66

(17) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'पेरिस रोड' - पृ - 144

(18) वहीं - पृ - 146

(19) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'गमले के फूल' - पृ - 156

(20) वहीं - पृ - 157

(21) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'सतहें' - पृ - 180

(22) वहीं - पृ - 181

(23) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'एक लड़की शोभा' - पृ - 208

(24) वहीं - पृ - 210

(25) वहीं - पृ - 211

(26) वहीं - पृ - 213

(27) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा संसार - पृ - 84

(28) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'काला बाप गोरा बाप' - पृ - 215

(29) वहीं - पृ - 215

(30) वहीं - पृ - 217

(31) वहीं - पृ - 218

(32) वहीं - पृ - 218

(33) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'विपर्यय' - पृ - 256

(34) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'झूठ' - पृ - 30

(35) वहीं - पृ - 31

(36) वहीं - पृ - 32

(37) वहीं - पृ - 31

(38) वहीं - पृ - 31

(39) वहीं - पृ - 35

(40) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'परवरिश के लिए' - पृ - 36

(41) वहीं - पृ - 36

(42) वहीं - पृ - 37

(43) वहीं - पृ - 41

(44) वहीं - पृ - 42

(45) वहीं - पृ - 42

(46) वहीं - पृ - 42

(47) वहीं - पृ - 42

(48) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'ब्लाटींग पेपर' - पृ - 51

(49) वहीं - पृ - 54

(50) वहीं - पृ - 52

(51) वहीं - पृ - 54

(52) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'उजाले के उल्लू' - 62

(53) वहीं - पृ - 62

(54) वहीं - पृ - 63

(55) वहीं - पृ - 63

(56) वहीं - पृ - 64

(57) वहीं - पृ - 65

(58) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'पत्नियाँ' - पृ - 93

(59) वहीं - पृ - 93

(60) वहीं - पृ - 94

(61) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'लोग' - पृ - 131

(62) वहीं - पृ - 131

(63) वहीं - पृ - 131

(64) वहीं - पृ - 132

(65) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'घिरे हुए क्षण' - पृ - 135

(66) वहीं - पृ - 138

(67) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कील' - पृ - 141

(68) वहीं - पृ - 140

(69) वहीं - पृ - 144

(70) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'गंध' - पृ - 168

(71) वहीं - पृ - 169

(72) वहीं - पृ - 169

(73) वहीं - पृ - 171

(74) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'घिराव' - पृ - 176

(75) वहीं - पृ - 176

(76) वहीं - पृ - 179

(77) वहीं - पृ - 177

(78) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'फोक्स' - पृ - 184

(79) वहीं - पृ - 184

(80) वहीं - पृ 184

(81) वहीं - पृ - 185

(82) वहीं - पृ - 186

(83) वहीं - पृ - 187

(84) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'सीधी रेखाओं का वृत' - पृ - 211

(85) वहीं - पृ - 211

(86) वहीं - पृ - 212

(87) वहीं - पृ - 213

(88) वहीं - पृ - 214

(89) वहीं - पृ - 214

(90) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कुछ और कितना' - पृ - 220

(91) वहीं - पृ - 224

(92) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'बाद की बात' - पृ - 227

(93) वहीं - पृ - 228

(94) वहीं - पृ - 228

(95) वहीं - पृ - 229

(96) वहीं - पृ - 229

(97) वहीं - पृ - 229

(98) वहीं - पृ - 230

(99) वहीं - पृ - 230

(100) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'शोर' - पृ - 234

(101) वहीं - पृ - 234

(102) वहीं - पृ - 234

(103) वहीं - पृ - 235

(104) वहीं - पृ - 235

(105) वहीं - पृ - 234

(106) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कटाव' - पृ - 249

(107) वहीं - पृ - 250

(108) वहीं - पृ - 250

(109) वहीं - पृ - 253

(110) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'सन्नाटा' - पृ - 15

(111) वहीं - पृ - 14-15

(112) वहीं - पृ - 13

(113) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'धूप की उंगलियों के निशान' - पृ - 121

(114) वहीं - पृ - 121

(115) वहीं - पृ - 127

(116) वहीं - पृ - 127

(117) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'लय' - पृ - 189

(118) वहीं - पृ - 188

(119) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'कल' - पृ - 223

(120) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'ऐसा ही है' - पृ - 226

(121) वहीं - पृ - 227

(122) वहीं - पृ - 227

(123) वहीं - पृ - 227

(124) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'पति' - पृ - 256

(125) वहीं - पृ - 256

(126) वहीं - पृ - 257

(127) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'काल संध्या' - पृ - 267

(128) डॉ.महीप सिंह, संबंधों का सन्नाटा, 'माँ' - पृ - 274

(129) वहीं - पृ - 275